नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 148
दि. 02.03.2026,
सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

तमिलनाडु में जनसभा के दौरान प्रधानमंत्री का डीएमके पर तीखा प्रहार, केंद्र की योजनाओं में बाधा का लगाया आरोप

(जीएनएस)। चेन्नई / मदुरै। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने तमिलनाडु दौरे के दौरान मदुरै में आयोजित विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए राज्य की सत्तारूढ़ द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (डीएमके) सरकार पर तीखा हमला बोला। उन्होंने आरोप लगाया कि डीएमके न तो गरीबों के हित में काम कर रही है और न ही केंद्र सरकार की कल्याणकारी योजनाओं को प्रभावी ढंग से लागू होने दे रही है। प्रधानमंत्री ने कहा कि राज्य की जनता विकास, पारदर्शिता और सुशासन की अपेक्षा रखती है, लेकिन वर्तमान सरकार उन अपेक्षाओं पर खरी नहीं उतर पा रही है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि केंद्र सरकार द्वारा गरीबों, किसानों, महिलाओं और युवाओं के कल्याण के लिए अनेक योजनाएं चलाई जा रही हैं, लेकिन तमिलनाडु में इन योजनाओं के क्रियान्वयन में राज्य सरकार की ओर से अपेक्षित सहयोग नहीं मिल रहा है। उन्होंने कहा कि केंद्र का उद्देश्य हर गरीब तक सरकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाना है, लेकिन जब राज्य सरकारें राजनीतिक कारणों से योजनाओं को धीमा कर देती हैं, तो उसका सीधा नुकसान गरीब और जरूरतमंद नागरिकों को होता है।

प्रधानमंत्री ने विशेष रूप से प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) का उल्लेख करते हुए कहा कि इस योजना के अंतर्गत तमिलनाडु में लाखों गरीब परिवारों को पक्का घर देने का लक्ष्य रखा गया था। उन्होंने बताया that राज्य में छह लाख से अधिक घरों का निर्माण पूरा हो चुका है, लेकिन लगभग तीन लाख घर अभी भी

अधूरे हैं। प्रधानमंत्री ने आरोप लगाया कि राज्य सरकार द्वारा सर्वेक्षण और प्रशासनिक प्रक्रियाओं में देरी की जा रही है, जिससे गरीब परिवारों को अपने घर मिलने में अनावश्यक विलंब हो रहा है। उन्होंने कहा कि गरीबों के लिए घर केवल एक संरचना नहीं, बल्कि सम्मान और सुरक्षा का प्रतीक होता है।

प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संबोधन में डीएमके पर वंशवादी राजनीति को बढ़ावा देने का भी आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि जनता ने 2021 में डीएमके को स्पष्ट जनादेश दिया था, लेकिन सरकार उस विश्वास पर खरी नहीं उतरी। उन्होंने आरोप लगाया कि राज्य सरकार विकास कार्यों की बजाय राजनीतिक हितों और कथित घोटालों में अधिक रुचि ले रही है। उन्होंने कहा कि सुशासन का अर्थ केवल सत्ता में बने रहना नहीं, बल्कि जनता के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाना होता है।

प्रधानमंत्री ने अपने भाषण में तमिलनाडु के पूर्व लोकप्रिय नेताओं एम. जी. रामचंद्रन और जे. जयललिता का उल्लेख करते हुए कहा कि उनके शासनकाल में राज्य में विकास और कानून-व्यवस्था को प्राथमिकता दी गई थी। उन्होंने कहा कि उन नेताओं ने हमेशा जनता के हित को सर्वोपरि रखा और राज्य को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने का प्रयास किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि वर्तमान समय में तमिलनाडु को फिर से उसी प्रकार के मजबूत और पारदर्शी नेतृत्व की आवश्यकता है।

प्रधानमंत्री ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और डीएमके पर केंद्र में सत्ता के दौरान तमिलनाडु के हितों की अनदेखी करने का भी आरोप लगाया। उन्होंने कच्चातीवु द्वीप और जल्लीकट्टू जैसे सांस्कृतिक और राजनीतिक मुद्दों का उल्लेख करते हुए कहा कि इन विषयों पर राज्य के हितों की पर्याप्त रक्षा नहीं की गई। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार ने तमिल संस्कृति, परंपराओं और गौरव को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए हैं।

प्रधानमंत्री ने अपने तमिलनाडु दौरे के दौरान कई महत्वपूर्ण आधारभूत संरचना परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास भी किया। उन्होंने बताया कि राज्य में आठ अमृत भारत रेलवे स्टेशनों और तीन नए आकाशवाणी एफएम रिले ट्रांसमीटरों का उद्घाटन किया गया है। इन परियोजनाओं का उद्देश्य राज्य में परिवहन, संचार और बुनियादी सुविधाओं को मजबूत बनाना है। उन्होंने कहा कि बुनियादी ढांचे का विकास किसी भी राज्य की आर्थिक प्रगति का आधार होता है और केंद्र सरकार इस दिशा में लगातार कार्य कर रही है।

प्रधानमंत्री ने चेन्नई बंदरगाह और मदुरवॉयल एलिवेटेड कॉरिडोर परियोजना का उल्लेख करते हुए कहा कि इन परियोजनाओं को पुनर्जीवित करने के लिए केंद्र सरकार ने विशेष प्रयास किए हैं। उन्होंने कहा कि इन परियोजनाओं के पूरा होने से यातायात व्यवस्था में सुधार होगा, व्यापार को बढ़ावा मिलेगा और रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे। उन्होंने यह भी कहा कि केंद्र सरकार तमिलनाडु को देश के प्रमुख औद्योगिक और आर्थिक केंद्र के रूप में विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संबोधन में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को राज्य के विकास के लिए एक मजबूत विकल्प बताया। उन्होंने कहा कि एनडीए का उद्देश्य केवल सत्ता प्राप्त करना नहीं, बल्कि राज्य की जनता को बेहतर शासन, पारदर्शिता और विकास प्रदान करना है। उन्होंने महिलाओं की सुरक्षा, युवाओं के लिए रोजगार और नशीले पदार्थों पर नियंत्रण को सरकार की प्राथमिकताओं में शामिल बताया।

संजू सैमसन की विस्फोटक पारी से भारत सेमीफाइनल में, वेस्टइंडीज का विश्व कप अभियान समाप्त

(जीएनएस)। कोलकाता। क्रिकेट के महाकुंभ में जब दबाव अपने चरम पर हो और हर रन इतिहास लिखने की क्षमता रखता हो, तब असली खिलाड़ी वही होता है जो परिस्थिति को अपने पक्ष में मोड़ दे। टी20 विश्व कप 2026 के सुपर-8 चरण के निर्णायक मुकाबले में भारत ने वेस्टइंडीज को 5 विकेट से हराकर न केवल सेमीफाइनल में जगह बनाई, बल्कि अपनी ताकत, संतुलन और आत्मविश्वास का भी शानदार प्रदर्शन किया। इस ऐतिहासिक जीत के नायक रहे संजू सैमसन, जिनकी नाबाद 97 रनों की तूफानी पारी ने भारतीय क्रिकेट प्रेमियों के दिलों में नई ऊर्जा भर दी और विरोधी टीम की उम्मीदों को पूरी तरह ध्वस्त कर दिया।

ईडन गार्डन्स के ऐतिहासिक मैदान पर खेले गए इस मुकाबले में वेस्टइंडीज ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया और शुरुआत से ही आक्रामक रुख अपनाया। उनके सलामी बल्लेबाजों ने संयम और आक्रामकता का बेहतरीन संतुलन दिखाते हुए टीम को मजबूत आधार प्रदान किया। शाई होप और रोस्टन चेज़ की जोड़ी ने भारतीय गेंदबाजों पर दबाव बनाने का प्रयास किया और तेजी से रन बटोरते हुए टीम को मजबूत स्थिति में पहुंचा दिया। हालांकि भारतीय टीम की गेंदबाजी इकाई ने भी हार नहीं मानी और जसप्रीत बुमराह ने अपनी सटीक लाइन और लेंथ से विपक्षी बल्लेबाजों को परेशान करना शुरू किया। बुमराह की घातक गेंदबाजी ने मैच की दिशा बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने लगातार तीन विकेट

लेकर वेस्टइंडीज की मजबूत होती पारी को झटका दिया और भारतीय टीम को मुकाबले में वापस ला खड़ा किया।

इसके बावजूद वेस्टइंडीज की टीम ने अंतिम ओवरों में शानदार वापसी की और पॉवेल तथा होल्डर के बीच हुई महत्वपूर्ण साझेदारी के दम पर निर्धारित 20 ओवरों में 195 रन बनाकर भारत के सामने 196 रनों का चुनौतीपूर्ण लक्ष्य रखा। यह लक्ष्य आसान नहीं था, खासकर उस दबाव में जब सेमीफाइनल में पहुंचने की उम्मीदें इस मैच पर टिकी हुई थीं।

भारत की पारी की शुरुआत उम्मीद के मुताबिक मजबूत नहीं रही। शुरुआती झटकों ने भारतीय टीम को असमंजस की स्थिति में डाल दिया। अभिषेक शर्मा और ईशान किशन के जल्दी आउट होने से टीम पर दबाव बढ़ गया और दर्शकों की चिंताएं भी बढ़ने लगीं। लेकिन इसी कठिन समय में संजू सैमसन ने जिम्मेदारी अपने कंधों पर ली और एक सच्चे योद्धा की तरह मैदान पर डटे रहे। उन्होंने शुरुआत में संयम दिखाया और धीरे-धीरे अपने शॉट्स का दायरा बढ़ाते हुए विपक्षी गेंदबाजों पर दबाव बनाना शुरू किया।

संजू की बल्लेबाजी में आत्मविश्वास, तकनीक और आक्रामकता का अद्भुत मिश्रण देखने को मिला। उन्होंने मैदान के चारों ओर शानदार शॉट्स लगाए और हर गेंदबाज के खिलाफ अपनी रणनीति स्पष्ट रखी। जब कप्तान सूर्यकुमार यादव उनके साथ जुड़े, तब दोनों बल्लेबाजों ने मिलकर भारतीय पारी को नई दिशा दी। इस साझेदारी ने मैच का संतुलन भारत की ओर झुका दिया और दर्शकों को उम्मीद की नई किरण दिखाई दी।

संजू ने केवल 26 गेंदों में अपना अर्धशतक पूरा किया, जो उनके आत्मविश्वास और शानदार फॉर्म का प्रमाण था। उन्होंने न केवल तेजी से रन बनाए, बल्कि परिस्थिति के अनुसार अपने खेल को ढाला और टीम की जरूरतों को प्राथमिकता दी। उनके शॉट्स में ताकत और सटीकता दोनों का अद्भुत संगम देखने को मिला। सूर्यकुमार यादव के आउट होने के बाद भी संजू ने अपना आक्रामक रुख बनाए रखा और तिलक वर्मा तथा हार्दिक पंड्या के साथ मिलकर टीम को लक्ष्य के करीब पहुंचाया।

मैच के अंतिम ओवरों में जब भारत को जीत के लिए तेज रन गति की जरूरत थी, तब संजू ने अपनी जिम्मेदारी को और बेहतर तरीके से निभाया। उन्होंने दबाव को खुद पर हावी नहीं होने दिया और पूरी शांति और आत्मविश्वास के साथ बल्लेबाजी जारी रखी। अंतिम क्षणों में उनके द्वारा लगाए गए निर्णायक शॉट्स ने भारत की जीत सुनिश्चित कर दी और पूरा स्टेडियम उत्साह से गूंज उठा।

संजू सैमसन की यह पारी कई मायनों में ऐतिहासिक रही। उन्होंने नाबाद 97 रन बनाकर न केवल टीम को जीत दिलाई, बल्कि यह भी साबित किया कि वह बड़े मंच के खिलाड़ी हैं और कठिन परिस्थितियों में टीम को जीत दिलाने की क्षमता रखते हैं। उनकी इस पारी ने उन्हें विश्व क्रिकेट के शीर्ष खिलाड़ियों की श्रेणी में और मजबूत स्थान दिलाया है। भारतीय टीम की इस जीत में गेंदबाजों और अन्य बल्लेबाजों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। जसप्रीत बुमराह की घातक गेंदबाजी, हार्दिक पंड्या की ऑलराउंड क्षमता और मध्यक्रम के बल्लेबाजों की उपयोगी पारियों ने टीम को संतुलन प्रदान किया।

लोनी में यूट्यूबर पर हमले का मुख्य आरोपी पुलिस मुठभेड़ में मारा गया, कानून-व्यवस्था पर सख्ती का संदेश

(जीएनएस)। गाजियाबाद। उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद जिले के लोनी क्षेत्र में यूट्यूबर सलीम वास्तिक पर हुए जानलेवा हमले के मुख्य आरोपी जीशान की पुलिस मुठभेड़ में मौत हो जाने से पूरे क्षेत्र में सनसनी फैल गई है। पुलिस के अनुसार जीशान को मुठभेड़ के दौरान गोली लगी और गंभीर रूप से घायल अवस्था में उसे अस्पताल ले जाया गया, जहां उपचार के दौरान उसने दम तोड़ दिया। इस घटनाक्रम के बाद कानून-व्यवस्था, सोशल मीडिया सुरक्षा और अपराधियों के खिलाफ प्रशासन की सख्त नीति को लेकर व्यापक चर्चा शुरू हो गई है। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि जीशान अमरोहा जिले का निवासी था और वह लंबे समय से फरार चल रहा था। यूट्यूबर सलीम पर हमले के बाद पुलिस ने विभिन्न तकनीकी साक्ष्यों, सीसीटीवी फुटेज और स्थानीय सूत्रों की मदद से आरोपियों की तलाश शुरू की थी। इसी क्रम में पुलिस को जीशान की लोकेशन का सुराग मिला। जब पुलिस टीम ने उसे घेरने का प्रयास किया, तब उसने भागने की कोशिश की और पुलिस पर हमला करने की कोशिश की, जिसके जवाब में पुलिस ने आत्मरक्षा में गोली चलाई। इस दौरान जीशान गंभीर रूप से घायल हो गया। इस घटना से एक दिन पहले ही योगी आदित्यनाथ ने इस हमले को गंभीरता से लेते हुए आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए थे। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट कहा था कि कानून को हाथ में लेने वाले किसी भी व्यक्ति को बख्शा नहीं जाएगा और दोषियों के खिलाफ कठोरतम कार्रवाई की जाएगी। मुख्यमंत्री की इस चेतावनी के बाद पुलिस और प्रशासन ने तेजी से कार्रवाई करते हुए मुख्य आरोपी तक पहुंच बनाई। इस घटनाक्रम को मुख्यमंत्री के सख्त कानून-व्यवस्था मॉडल के उदाहरण के रूप में भी देखा जा रहा है, जिसमें अपराधियों के खिलाफ त्वरित और निर्णायक कार्रवाई की जाती है। यह पूरा मामला उस समय सामने आया जब शुक्रवार सुबह यूट्यूबर सलीम वास्तिक अपने कार्यालय में मौजूद थे। उसी दौरान बाइक पर सवार दो हमलावर अचानक वहां पहुंचे और बिना किसी चेतावनी के उन पर चाकू से ताबड़तोड़ हमला कर दिया। हमलावरों ने उनकी गर्दन और पेट पर कई वार किए, जिससे वह गंभीर रूप से घायल होकर जमीन पर गिर पड़े। घटना के बाद हमलावर मौके से फरार हो गए, जबकि आसपास मौजूद लोगों ने तुरंत पुलिस और एंबुलेंस को सूचना दी। घायल अवस्था में सलीम को पहले स्थानीय अस्पताल ले जाया गया, जहां उनकी स्थिति को देखते हुए उन्हें दिल्ली के गुरु तेग बहादुर अस्पताल में रेफर कर दिया गया। अस्पताल के डॉक्टरों ने उनकी गर्दन का जटिल ऑपरेशन किया और बताया कि उनकी हालत गंभीर लेकिन नियंत्रण में है। डॉक्टरों के अनुसार उनके शरीर पर गहरे घाव थे और उन्हें बचाने के लिए कई चरणों में सर्जरी की आवश्यकता थी। चिकित्सकों की एक विशेष टीम उनकी निगरानी कर रही है और उनकी स्थिति में धीरे-धीरे सुधार हो रहा है। सलीम वास्तिक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म यूट्यूब पर सक्रिय हैं और अपने विचारों तथा सामाजिक मुद्दों पर आधारित वीडियो बनाते हैं। उन्होंने खुद को 'एक्स मुस्लिम' के रूप में प्रस्तुत किया है और उनके वीडियो कई बार विवाद का विषय बन चुके हैं। उनके विचारों के कारण उन्हें पहले भी सोशल मीडिया पर धमकियां मिलती रही थीं। पुलिस सूत्रों के अनुसार हमले के पीछे व्यक्तिगत दुश्मनी, वैचारिक मतभेद या संगठित साजिश जैसे विभिन्न पहलुओं की जांच की जा रही है। हमले के बाद पुलिस ने मामले को गंभीरता से लेते हुए विशेष जांच टीम का गठन किया था। टीम ने सीसीटीवी फुटेज, मोबाइल कॉल डिटेल्स और अन्य तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर आरोपियों की पहचान की और उनकी तलाश शुरू की। पुलिस का कहना है कि इस मामले में अन्य संदिग्धों की भूमिका की भी जांच की जा रही है और जल्द ही उन्हें भी गिरफ्तार किया जाएगा। इस घटना ने सोशल मीडिया कंटेंट क्रिएटर्स की सुरक्षा को लेकर भी गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। डिजिटल युग में जहां लाखों लोग अपने विचारों को ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से व्यक्त कर रहे हैं, वहीं ऐसे हमले अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और व्यक्तिगत सुरक्षा के बीच संतुलन को लेकर नई बहस छेड़ रहे हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि सोशल मीडिया पर सक्रिय लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए विशेष उपाय किए जाने चाहिए और धमकी देने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए।

स्थानीय लोगों के बीच भी इस घटना को लेकर मिश्रित प्रतिक्रियाएं देखने को मिली हैं। कुछ लोगों ने पुलिस की त्वरित कार्रवाई की सराहना की है, जबकि कुछ ने पूरे मामले की निष्पक्ष जांच की आवश्यकता पर जोर दिया है। नागरिकों का कहना है कि कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए अपराधियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई जरूरी है, लेकिन साथ ही यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि हर कार्रवाई कानूनी प्रक्रिया के अनुसार हो। उत्तर प्रदेश में पिछले कुछ वर्षों में अपराध के खिलाफ सख्त नीति अपनाई गई है और पुलिस को अपराधियों के खिलाफ निर्णायक कार्रवाई के निर्देश दिए गए हैं। राज्य सरकार का कहना है कि कानून-व्यवस्था बनाए रखना उसकी सर्वोच्च प्राथमिकता है और किसी भी अपराधी को बख्शा नहीं जाएगा। इस घटना के बाद पुलिस और प्रशासन ने क्षेत्र में सुरक्षा व्यवस्था और कड़ी कर दी है तथा संवेदनशील स्थानों पर अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया गया है।

पुलिस अधिकारियों का कहना है कि इस मामले की जांच अभी जारी है और सभी संभावित पहलुओं की गहन जांच की जा रही है। अधिकारियों ने यह भी स्पष्ट किया है कि घटना में शामिल अन्य लोगों की पहचान कर उन्हें जल्द ही गिरफ्तार किया जाएगा। पुलिस का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि पीड़ित को न्याय मिले और भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो।

राजस्थान में माउंट अबू कामा और जहाजपुर के नाम बदल दिए गए हैं

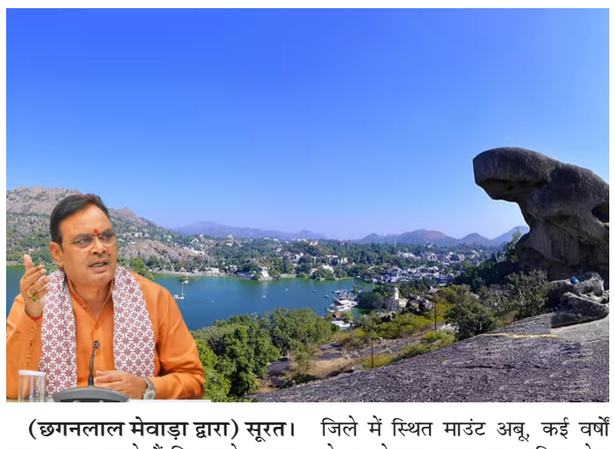

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। हम अक्सर कहते हैं कि हमने अपना नाम कहां रखा है, लेकिन हमने बहुत कम नाम रखा है। और राजस्थान सरकार ने भी कुछ ऐसा ही किया है।

शून्य त्रुटि विज्ञापन

देश के अन्य राज्यों में नामों में परिवर्तन की लहर चलने के साथ ही राजस्थान सरकार भी ऐसा ही कर रही है। हाल ही में राजस्थान सरकार ने तीन शहरों के नाम बदले हैं। माउंट अबू को अबूराज, कामा को कामावन और जहाजपुर को यज्ञपुर के नाम से जाना जाएगा।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने विधानसभा में यह घोषणा की। सरकार ने इसे क्षेत्र की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान को पुनर्स्थापित करने की दिशा में एक बड़ा कदम बताया है।

राज्य का एकमात्र हिल स्टेशन, सिरोही जिले में स्थित माउंट अबू, कई वर्षों से न केवल राजस्थान बल्कि देश और विदेश के पर्यटकों के लिए भी एक प्रमुख आकर्षण रहा है। माउंट अबू को हिंदी में अबू पर्वत के नाम से जाना जाता है। अबूराज इसकी प्राचीन पहचान है, जिसे अब मान्यता मिल चुकी है।

भरतपुर जिले में धार्मिक महत्व रखने वाले कामा का नाम बदलकर कामावन कर दिया जाएगा। कामा को ब्रज क्षेत्र की संस्कृति से गहराई से जुड़ा हुआ माना जाता है। जहाजपुर भीलवाड़ा जिले का एक ऐतिहासिक शहर है। इसकी जड़ें प्राचीन धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं में गहरी हैं। सरकार का दावा है कि यह शहर प्राचीन यज्ञ परंपराओं और धार्मिक मान्यताओं से जुड़ा हुआ है। इसीलिए इसका यह नामकरण किया गया है।

अदालत ने दोपहर के भोजन के दौरान बीयर पीने वाले कर्मचारी के खिलाफ फैसले को बरकरार रखा, कंपनी को मुआवजा देना पड़ा

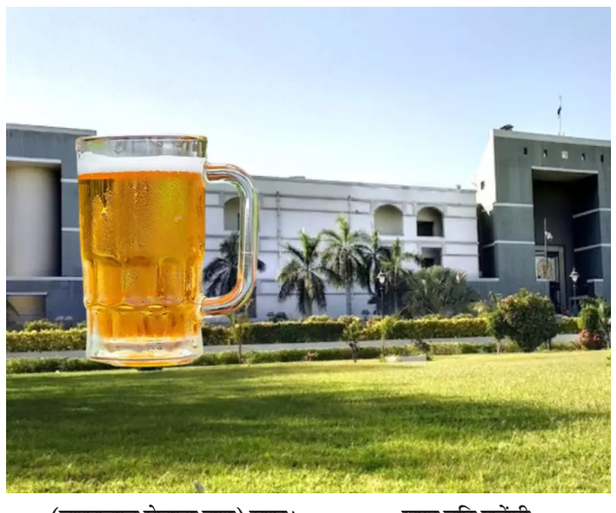

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। यह स्पेन की एक कहानी है, जहाँ एक कर्मचारी पर काम पर आने के बाद बीयर पीने का संदेह था। कंपनी की नीति के अनुसार, कार्यालय समय के दौरान और कार्यालय के अंदर शराब या अल्कोहल युक्त कोई भी पेय पीना प्रतिबंधित था। हालांकि, इस व्यक्ति के बीयर पीने के संदेह में, उसके वरिष्ठ अधिकारियों ने उस पर नज़र रखने के लिए जासूस लगा दिए। उसने कार्यालय में इस तरह से शराब नहीं पी थी जिससे किसी की नज़र उस पर पड़े, लेकिन ऐसा लग रहा था कि वह वापस आने के बाद कहीं से बीयर पी रहा था। इस शिकायत पर, कंपनी ने कर्मचारी पर नज़र रखने के लिए एक जासूस लगाया और कंपनी का संदेह सही साबित हुआ। लंच ब्रेक के दौरान, वह पार्किंग में जाकर अपनी कार में बैठकर बीयर पीता था। जब इसका सबूत मिला, तो कंपनी ने उसे तुरंत रंगे हाथों पकड़ लिया।

शून्य त्रुटि एजेंसी

कर्मचारी को अचानक नौकरी छूटने का डर भी था। हालांकि, उसने तर्क दिया कि उसकी बर्खास्तगी का कारण गैरकानूनी था। उसने अपील की। मामला अदालत में गया और अदालत ने कर्मचारी के पक्ष में फैसला सुनाया। न्यायाधीश ने कहा कि कर्मचारी लंच ब्रेक के दौरान बीयर पी रहा था। लंच ब्रेक को कार्यालय के कार्य समय में नहीं गिना जाता है।

दूसरे, वह अपनी कार में शराब पी रहा था और इसलिए उसने कंपनी की इमारत का इस्तेमाल नहीं किया। वहीं दूसरी ओर, कंपनी यह साबित नहीं कर पाई कि बीयर पीने का उसके काम पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा था। अदालत ने कंपनी को आदेश दिया कि या तो वह कर्मचारी को फिर से नौकरी पर रखे या 50 लाख रुपये का मुआवजा दे। कंपनी ने कर्मचारी को फिर से नौकरी पर रखने के बजाय मुआवजा देना चुना।

संपादकीय

ट्रायल कोर्ट के फैसले से आप को प्राणवायु

दिल्ली की एक ट्रायल कोर्ट ने शराब नीति से जुड़े कथित भ्रष्टाचार मामले में आम आदमी पार्टी के संयोजक व दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल व डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया को आरोप मुक्त किया है। उल्लेखनीय है कि यह फैसला सीबीआई की तरफ से दायर मामले में आया है। अदालत ने सीबीआई की जांच में खामियों को उजागर करते हुए कहा कि आरोप गवाह या ठोस सबूतों पर आधारित नहीं हैं। अदालत का तर्क था कि चार्जशीट में उल्लेखित दावे तार्किक आधार नहीं रखते। उल्लेखनीय है कि अरविंद केजरीवाल के मुख्यमंत्री रहते हुए दिल्ली सरकार ने एक नई आबकारी नीति साल 2021 में लागू की थी। जिसके अंतर्गत शराब कारोबार निजी क्षेत्र को देने का निर्णय लिया गया था। तत्कालीन सरकार ने दलील दी थी कि नई नीति राज्य के राजस्व में आशातीत वृद्धि करेगी। बहरहाल, दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री केजरीवाल और उनके डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया फिलहाल नैतिक रूप से खुद को बेहतर स्थिति में होने का दावा कर सकते हैं। उल्लेखनीय है कि ट्रायल कोर्ट ने सीबीआई द्वारा दर्ज दिल्ली उत्पाद शुल्क नीति मामले में केजरीवाल तथा 21 अन्य आरोपियों को बरी कर दिया है। निश्चय ही संकट से जूझ रही आम आदमी पार्टी के लिये यह फैसला प्राणवायु जैसा साबित हो सकता है। दरअसल, कोर्ट ने इस बाबत सख्त टिप्पणी करते हुए कहा कि जांच एजेंसी का मामला न्यायिक जांच की कसौटी पर खरा नहीं उतरता है। कोर्ट का कहना था कि अटकलों व अनुमानों को कानूनी रूप से मान्य सबूतों के रूप में पेश नहीं किया जा सकता। बहरहाल, इस फैसले के खिलाफ सीबीआई ने दिल्ली हाईकोर्ट में अपील दायर कर दी है। इसके बावजूद ट्रायल कोर्ट का यह फैसला केजरीवाल व उनकी टीम के लिये आधी लड़ाई जीतने जैसा है। जिससे वे खुद को आम आदमी पार्टी के कोर वोटरों को अपने पाक-साफ होने का विश्वास दिलाने का प्रयास कर सकते हैं।

उल्लेखनीय है कि बीते साल दिल्ली विधानसभा चुनाव में भाजपा ने इस प्रकरण को अपना मुख्य मुद्दा बनाकर आम आदमी पार्टी के शीर्ष नेतृत्व पर तीखे हमले बोले थे। पार्टी ने दिल्ली के मतदाताओं को यह समझाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी कि केजरीवाल सरकार का भ्रष्टाचार विरोधी अभियान सिर्फ एक राजनीतिक प्रपंच है। बहरहाल, इन आरोपों के बीच स्वच्छ शासन का वादा करते हुए भाजपा ने 26 वर्ष के लंबे अंतराल पर दिल्ली की सत्ता में वापसी की थी, जबकि आप दूसरे स्थान पर रही थी। दिल्ली विधानसभा में मिली शिकस्त के बाद ही आप के शीर्ष नेतृत्व ने अपना पूरा ध्यान पंजाब पर लगाया था। आज पंजाब ही ऐसा राज्य है जहां आम आदमी पार्टी की सरकार बची है। भले ही ट्रायल कोर्ट के फैसले को दिल्ली हाईकोर्ट में चुनौती दी है,लेकिन एक बात तो तय है कि निचली अदालत के आदेश के बाद आप को दिल्ली में खोये जनाधार को फिर से हासिल करने का मौका मिल सकेगा। वह अपनी पार्टी के मुख्य भ्रष्टाचार विरोधी अभियान को फिर से चलाने के लिये नैतिक बल तो हासिल कर पायी है। दरअसल, इस फैसले से जांच में अत्यधिक दखलंदाजी को लेकर कई असहज करने वाले सवाल भी उठे हैं। खासकर अदालत की वह टिप्पणी, जिसमें कहा गया कि जांच एक पूर्वनिर्धारित दिशा में चलती प्रतीत होती है। यानी जांच में उचित प्रक्रिया का उल्लंघन किया गया है। दूसरी ओर प्रवर्तन निदेशालय यानी ईडी ने कहा है कि आबकारी नीति मामले में जुड़ी उसकी मनी लॉन्ड्रिंग की स्वतंत्र जांच मजबूत आधार रखती है। कानून के पंडित कयास लगा रहे हैं कि यदि सीबीआई मामले में निचली अदालत के फैसले को उच्च न्यायालय द्वारा भी बरकरार रखा जाता है तो ईडी द्वारा अभियोजन की कानूनी वैधता पर नये सिरे से सवाल उठ सकते हैं। बहरहाल, निचली अदालत के फैसले ने केजरीवाल, सिसोदिया तथा आम आदमी पार्टी में नई ऊर्जा का संचार तो कर ही दिया है। निश्चित रूप से दिल्ली में सरकार बनाने वाली भाजपा के लिये यह स्थिति असहज करने वाली है।

विश्वविद्यालयों की ब्रांडिंग के युग में मौलिकता का प्रश्न

> "बाजार चालित नव उदारवादी व्यवस्था शिक्षण क्षेत्र पर कब्ज़ा कर लेती है, तो यूनिवर्सिटीज अपनी 'ब्रांड' वैल्यू बेचने लगती हैं। यूं भी औपनिवेशिक काल की सोच के चलते मूल रिसर्च करने के बजाय नकल की प्रवृत्ति बढ़ी। एआई इंपेक्ट समिट में गलगोटिया विवि की प्रोफेसर ने जो किया, उससे यह स्पष्ट होता है कि किसी नकल करने वाले देश के लिए मौलिक बनना आसान नहीं।

यकीन मानिए, मुझे हैरानी नहीं हुई जब मुझे पता चला कि गलगोटिया यूनिवर्सिटी के एक प्रोफेसर ने हाल ही में देश की राजधानी में हुई भारत एआई इंपेक्ट समिट में विवाद खड़ा कर दिया है। जी हां, प्रोफेसर नेहा सिंह को अपनी यूनिवर्सिटी की 'उपलब्धि' दिखाने के लिए झूठा दावा करने में ज़रा भी झिझक महसूस नहीं हुई। हां, हम सबने देखा कि किस प्रकार उन्होंने सरकारी टेलीविजन चैनल डीडी न्यूज़ को विवरण दिया—और वह भी उस किस्म की 'चतुराई' के साथ जो हम कॉर्पोरेट कंपनियों के ज़हीन सेल्समैन में देखते हैं— कि 'ओरियन' नाम का रोबोटिक श्वान यूनिवर्सिटी के सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस में विकसित किया गया है, जबकि कड़वा सच यह है कि इस रोबोट को चीनी रोबोटिक्स कंपनी, 'यूनिट्री' ने ईजाद किया है, और यह भारत में भी ऑनलाइन बेचा जाता है। इसमें अचरज नहीं है क्योंकि हमारी पीढ़ी ने यूनिवर्सिटी के जिस आदर्श को संजोया था, वह भरभरा कर टूट चुका है। हमने सोचा था कि किसी यूनिवर्सिटी की पहचान उसकी व्यावहारिक सहभागिता, अर्थपूर्ण अनुसंधान, आलोचनात्मक विचार, नैतिक संवेदनशीलता और सबसे ऊपर, शिक्षण की गरिमा से जानी जाएगी। एक यूनिवर्सिटी, जैसा कि हम मानते हैं, वह गुणवत्ता में किसी व्यापारिक प्रतिष्ठान, शॉपिंग मॉल या विज्ञापन एजेंसी से अलग जगह होती है। लेकिन फिर, हम एक बिल्कुल अलग समय में जी रहे हैं। जैसे-जैसे बाजार चालित नव उदारवादी मशीनी तार्किकता शिक्षण क्षेत्र पर कब्ज़ा कर लेती है, शिक्षा पूरी तरह से व्यापार बन जाती है, आलोचनात्मक विमर्श बलि चढ़ जाता है, छात्र उपभोक्ता बनकर रह जाता है और अध्यापक सेवा प्रदाता की भूमिका निभाने लगता है।

कोई हैरानी नहीं कि एक यूनिवर्सिटी भी अपनी 'ब्रांड' वैल्यू बेचने लगी हैं -जैसे कोई कंपनी डिटर्जेंट पाउडर बेचती हो और बेचे जाने वाले अपने उत्पाद के फायदों के बारे में हर तरह के झूठे या बढ़ा-चढ़ाकर दावे करे। असल में, रोबोटिक्स, डेटा साइंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस- ये फैंसी 'उत्पाद' हैं जिन्हें नवउदारवादी यूनिवर्सिटी रणनीतिक विज्ञापनों और बढ़ा-चढ़ाकर किए गए दावों के ज़रिए बेचना चाहती है। इसलिए अगर कोई यूनिवर्सिटी एआई के क्षेत्र में अपनी उपलब्धि के बारे में झूठे दावे करती हो तो आपको और मुझे हैरानी क्यों होनी चाहिये? एक प्रकार से, प्रोफ़ेसर नेहा सिंह को दोष नहीं दिया जाये क्योंकि आखिरकार वे खुद एक ऐसी संस्कृति का उत्पाद हैं जो यूनिवर्सिटी को लाभ कमाने वाला एक धंधा, एक प्रोफ़ेसर को जन संपर्क एजेंट और छात्र अथवा अभिभावक को एक संभावित ग्राहक की तरह लेता है। भले ही गलगोटिया यूनिवर्सिटी फिलहाल खबरों में है, लेकिन सच तो यह है कि एक यूनिवर्सिटी को 'ब्रांड' के तौर पर बेचने का यह काम अब आम बात है। और शिक्षा के इस किस्म के सरेआम व्यवसायीकरण को 'रैंकिंग' की राजनीति और आगे बढ़ा-चढ़ाकर पेश करती है। सड़क किनारे लगे बिलबोर्ड या चमकदार पत्रिकाओं एवं अख़बारों में दिए भव्य विज्ञापन देखिए, तो आप आसानी से गौर कर सकते हैं कि कैसे इन सभी संस्थानों को 'टॉप रैंकिंग यूनिवर्सिटी' के तौर पर पेश किया जा रहा है। और ऐसी रैंकिंग एजेंसियों की कोई कमी नहीं है जिनकी सेवाएं ये यूनिवर्सिटियां निरंतर लेती रहती हैं और आमंत्रित करती हैं। और इन यूनिवर्सिटी की यत्नपूर्वक गढ़ी गई छवि अक्सर इनकी उपलब्धियों और सबसे बढ़कर, इनके 'प्रोडक्ट' (छात्रों) को, गूगल, इंफ़ोसिस, विप्रो, अमेज़न वगैरह से मिलने वाले 'पैकेज' के बारे में हर तरह के बढ़ा-चढ़ाकर किए गए दावों से भरी होती हैं। समझ नहीं आता कि हंसा जाये या रोया जाये, जब पाते हैं कि कोई यूनिवर्सिटी इस किस्म के शानदार विज्ञापन से खुद को 'दुकान' के तौर पर बेच रही होती है, मसलन, 'यूनिवर्सिटी ने वर्ल्ड क्यूएस यूनिवर्सिटी रैंकिंग्सः एशिया 2026 में हासिल किया एक और मील का पत्थर... दक्षिणी एशिया में 116वें और पूरे एशिया में 454वें पायदान पर रखा गया है... डिग्री लेने वाले 98 प्रतिशत विद्यार्थियों ने टॉप की कंपनियों में नौकरी पाई; 5.4 लाख रूप औसत सालाना पैकेज; और उच्चतम वेतन 1.5 करोड़ रुपये वार्षिक '।

इस किस्म के माहौल में, कोई प्रोफेसर सच की तलाश करने वाला नहीं हो सकता; उसे भी उस यूनिवर्सिटी की 'ब्रांड वैल्यू' के बारे में झूठे या बढ़ा-चढ़ाकर दावे करने पड़ते हैं जिसने उसे नौकरी पर रखा है। प्रोफेसर नेहा सिंह की मानसिक उलझन समझी जा सकती है। इसके अलावा, ज़िंदा रहने के लिए, इन तमाम शिक्षा दुकानों को लगातार सत्तारूढ़ सरकार को संतुष्ट करना पड़ता है। यह मत भूलिए कि गलगोटिया यूनिवर्सिटी को, जैसा कि खबरें बताती हैं, एआई प्रदर्शनी हॉल में चार आईआईटी को कुल मिलाकर मिले बूथ से भी बड़ा बूथ मिला था। और विशेष तौर पर जब हमें बताया जाता है कि भारत को 'विश्वगुरु' होने के नाते आर्टीफिशियल इंटेलीजेंस में पीछे नहीं रहना चाहिए- यह तकनीकी-आदर्शवाद का नवीनतम ब्रांड है जिसे कॉर्पोरेट अरबपति बेचने के लिए बेकरार हैं- तो शायद गलगोटिया यूनिवर्सिटी ने सत्तारूढ़ सरकार को खुश करने के लिए सारी हदें पार कर दीं और, विडंबना यह कि सरकार को शर्मिंदगी का सामना करना पड़ा। वास्तव में, यह देश में राजनीति और शिक्षा की हालत पर एक दुःखद टिप्पणी है। इसी प्रकार, मान लीजिए, एक चीनी रोबोटिक श्वान को भारतीय आविष्कार के तौर पर दिखाने की यह अजीब इच्छा यह भी दर्शाती है कि हम भारत को एक नकलची देश में बदलने में कभी शर्म महसूस नहीं करते। शायद, हम अभी तक अपनी चेतना को औपनिवेशिक काल की मानसिकता से उबार पाने में सफल नहीं हो पाए। आज़ादी के बाद के भारत में भी, 'विकसित' पश्चिम हमारे लिए सकरात्मक मानक बिंदु के तौर पर था। मसलन, अपनी विशिष्ट शिक्षा संस्कृति को बेहतर बनाने और अपने संस्थान उनके जैसे बनाने, जो आत्मविश्वास से भरपूर हों और स्थानीय ज़रूरतों एवं चुनौतियों के मुताबिक काम करें, इसकी बजाय हम ऑक्सफ़ोर्ड, कैम्ब्रिज, हार्वर्ड या प्रिंसटन को अपने लिए बतौर रोल मॉडल देखते रहते हैं।

मुझे सच में दुख होता है जब मैं देखता हूं कि भारत में एक अच्छे कॉलेज/यूनिवर्सिटी को पूर्व का 'ऑक्सफ़ोर्ड' कहा जाता है! इसके अलावा, हमें यूरोपियन/अमेरिकन फैशन की नकल करना पसंद है; बॉलीवुड निर्माता और निर्देशक को सफल पश्चिमी फिल्मों की नकल करते देखना कोई अजीब बात नहीं है, और, जैसा कि कहा जाता है, हमारी ज़्यादातर तकनीकी/व्यावसायिक इनोवेशन मूल रचना होने की बजाय चीनी या पश्चिम के रूपांतरण हैं। क्या यह कहना पूरी तरह गलत होगा कि फ्लिपकार्ट, अमेज़न की निम्नस्तरीय नकल है या ज़ोमैटो, डोरडैश की कॉपी कर रहा है? और यह कॉपी-पेस्ट संस्कृति, अंदरूनी जानकारी रखने वाले हर किसी को मालूम है, शिक्षा जगत में यह आम हो चला है—जिस तरह से रिसर्च पेपर तैयार किए जाते हैं, और, मान लीजिए, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विषयों में, हर कोई जूडिथ बटलर और मिशेल फूको की शब्दावली की नकल करने लगता है

वास्तव में, गलगोटिया यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर ने जो किया, उससे पता चलता है कि किसी नकलची देश के लिए मूल खोजकर्ता बनना आसान नहीं है।

प्रेरणा

विखरते पहाड़ की आत्मा और लोकचेतना का मार्मिक

उत्तराखंड के पर्वतीय अंचलों में जीवन केवल भौगोलिक ऊंचाई का अनुभव नहीं है, बल्कि वह संवेदनाओं, संघर्षों, परंपराओं और सामाजिक रिश्तों की गहराई से निर्मित एक जीवंत संसार है। यहां का समाज प्रकृति के साथ सहजीवन की उस परंपरा को जीता रहा है, जिसमें परिवार केवल खून के रिश्तों का समूह नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक और सांस्कृतिक इकाई होता है। इसी पहाड़ी समाज की आंतरिक टूटन, बदलती संरचना और मानवीय पीड़ा को लोकभाषा की मार्मिक शक्ति के माध्यम से अभिव्यक्त करने वाला काव्य संग्रह ज आम्म छांट नई एक महत्वपूर्ण और विचारोत्तेजक साहित्यिक कृति के रूप में सामने आता है। इसके रचयिता महाबीर रवांल्टा ने अपनी कविताओं के माध्यम से उस सामाजिक यथार्थ को स्वर दिया है, जो पहाड़ की नीरव घाटियों और बिखरते आंगनों में लंबे समय से मौन पीड़ा के रूप में मौजूद रहा है। यह काव्य संग्रह विशेष रूप से उत्तरकाशी अंचल की रवांल्टी लोकभाषा में रचा गया है, जो अपने आप में इस कृति की सबसे बड़ी विशेषता है। लोकभाषा में अभिव्यक्ति केवल शब्दों का चयन नहीं, बल्कि एक पूरे सांस्कृतिक अनुभव का पुनर्सृजन है। रवांल्टी भाषा की सहजता, उसकी आत्मीयता और उसकी धरती से जुड़ी संवेदनशीलता इस संग्रह को कृत्रिमता से दूर रखती है और उसे वास्तविक जीवन के अत्यंत निकट ले आती है। इस संग्रह में शामिल 40 से अधिक कविताएं पहाड़ के सामाजिक जीवन की उन परतों को खोलती हैं, जिन्हें आधुनिकता और शहरीकरण की दौड़ में अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है। इस संग्रह का शीर्षक 'ज आम्म छांट नई' अपने भीतर गहरी पीड़ा और प्रश्न को समेटे हुए है। इसका अर्थ केवल एक संतान का अपनी मां से किया गया भावनात्मक प्रश्न नहीं, बल्कि उस सामूहिक संरचना से किया गया सवाल है, जो कभी व्यक्ति की सबसे बड़ी ताकत हुआ करती थी। यहां 'मां' एक व्यापक प्रतीक है—वह घर है, वह गांव है, वह परंपरा है, वह संयुक्त परिवार है, जिसने पीढ़ियों तक व्यक्ति को पहचान, सुरक्षा और आत्मबल प्रदान किया। जब यही संरचना टूटती है, तो व्यक्ति केवल भौतिक रूप से नहीं, बल्कि मानसिक और भावनात्मक रूप से भी विखंडित हो जाता है। कवि ने इस विखंडन की पीड़ा को अत्यंत सूक्ष्मता और संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है। कविताओं में संयुक्त परिवार के विघटन की प्रक्रिया को केवल एक सामाजिक परिवर्तन के रूप में नहीं, बल्कि एक मानवीय त्रासदी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। पहले जहां एक ही आंगन में कई पीढ़ियां साथ रहती थीं, वहां अब अलग-अलग चूल्हे जलने लगे हैं। पहले जहां दुख-सुख साझा होते थे, वहां अब व्यक्ति अपने ही जीवन में सीमित होकर रह गया है। यह बदलाव केवल भौतिक दूरी का नहीं, बल्कि भावनात्मक दूरी का भी प्रतीक है। कवि ने दिखाया है कि किस तरह आधुनिक जीवन की भागदौड़ और व्यक्तिगत स्वार्थ ने रिश्तों की गर्माहट को कम कर दिया है।कविताओं में गांव से शहर की ओर पलायन की समस्या भी गहराई से उभरकर सामने आती है। पहाड़ के युवा बेहतर शिक्षा, रोजगार और सुविधाओं की तलाश में शहरों की ओर जा रहे हैं। यह पलायन केवल भौगोलिक परिवर्तन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक विघटन की प्रक्रिया भी है। जब युवा गांव छोड़ते हैं, तो उनके साथ गांव की ऊर्जा, उसकी जीवंतता और उसकी सामाजिक संरचना भी कमजोर हो जाती है। पीछे छूट जाते हैं बुजुर्ग, खाली घर और स्मृतियों से भरे आंगन। कवि ने इस खालीपन को अत्यंत मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त किया है। संग्रह की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें आधुनिक तकनीक और बदलती जीवन शैली के प्रभाव को भी संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया गया है। मोबाइल फोन और डिजिटल दुनिया ने जहां संचार को आसान बनाया है, वहीं उसने रिश्तों की आत्मीयता को भी प्रभावित किया है। पहले जहां लोग एक-दूसरे के साथ बैठकर बातचीत करते थे, अब वे मोबाइल स्क्रीन में व्यस्त रहते हैं। यह बदलाव केवल व्यवहार का नहीं, बल्कि सोच और संवेदनाओं का भी है। कवि ने इस परिवर्तन को आलोचना के रूप में नहीं, बल्कि एक यथार्थ के रूप में प्रस्तुत किया है। महाबीर रवांल्टा की कविताओं की सबसे बड़ी ताकत उनकी सादगी और ईमानदारी है। उन्होंने किसी कृत्रिम अलंकरण या जटिल भाषा का सहारा नहीं लिया, बल्कि जीवन के अनुभवों को उसी रूप में प्रस्तुत किया, जैसा उन्होंने महसूस किया। यही कारण है कि उनकी कविताएं पाठक के हृदय को सीधे स्पर्श करती हैं। उनमें एक सहज प्रवाह है, जो पाठक को अपने साथ बहा ले जाता है और उसे अपने ही जीवन और समाज के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करता है। यह संग्रह केवल एक साहित्यिक कृति नहीं, बल्कि एक सामाजिक दस्तावेज भी है। यह पहाड़ के समाज में हो रहे उन परिवर्तनों का साक्ष्य प्रस्तुत करता है, जो धीरे-धीरे उसकी पारंपरिक संरचना को प्रभावित कर रहे हैं। यह कृति हमें यह सोचने के लिए मजबूर करती है कि विकास और आधुनिकता की दौड़ में हम क्या खो रहे हैं और क्या पा रहे हैं। क्या भौतिक सुविधाओं की प्राप्ति के बदले हम अपनी सामाजिक और भावनात्मक जड़ों से दूर हो रहे हैं? क्या हम उस सामूहिकता को खो रहे हैं, जिसने हमें एक समाज के रूप में मजबूत बनाया था? इस संग्रह का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह लोकभाषा के महत्व को भी रेखांकित करता है। लोकभाषाएं केवल संचार का माध्यम नहीं होतीं, बल्कि वे एक पूरे सांस्कृतिक अनुभव की वाहक होती हैं। उनमें उस समाज की स्मृतियां, उसकी परंपराएं और उसकी पहचान निहित होती है। जब लोकभाषा में साहित्य रचा जाता है, तो वह केवल शब्दों का सृजन नहीं होता, बल्कि वह सांस्कृतिक संरक्षण का कार्य भी होता है। इस दृष्टि से यह संग्रह लोकभाषा और लोकसंस्कृति के संरक्षण में एक महत्वपूर्ण योगदान है। यह कृति हमें यह भी सिखाती है कि साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज को आईना दिखाना भी है। यह हमें हमारी वास्तविकता से परिचित कराता है और हमें अपने समाज और जीवन के बारे में गंभीरता से सोचने के लिए प्रेरित करता है। महाबीर रवांल्टा की यह काव्य कृति इसी परंपरा का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। अंततः, 'ज आम्म छांट नई' केवल पहाड़ के समाज की कहानी नहीं, बल्कि उस सार्वभौमिक मानवीय अनुभव की अभिव्यक्ति है, जिसे हर समाज किसी न किसी रूप में अनुभव करता है। यह कृति हमें यह याद दिलाती है कि परिवार, समाज और सामूहिकता केवल सामाजिक संरचनाएं नहीं, बल्कि हमारी पहचान और अस्तित्व का आधार हैं। जब ये संरचनाएं कमजोर होती हैं, तो व्यक्ति भी भीतर से कमजोर हो जाता है।

एक नई जंग, मिडिल ईस्ट में बढ़ा तनाव

पश्चिम एशिया एक बार फिर उस भयानक मोड़ पर खड़ा दिखाई दे रहा है, जहां से आगे का रास्ता केवल अस्थिरता, युद्ध और वैश्विक संकट की ओर जाता है। पिछले कुछ दिनों में जिस तरह अमेरिका ने ईरान को लगातार चेतावनियां दीं और उसके चारों ओर सैन्य एवं कूटनीतिक घेरेबंदी तेज की, उससे यह आभास हो रहा था कि उसका मुख्य उद्देश्य दबाव बनाकर ईरान को परमाणु कार्यक्रम छोड़ने के लिए मजबूर करना है। अमेरिका लंबे समय से यह आरोप लगाता रहा है कि ईरान परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम की आड़ में परमाणु हथियार विकसित करना चाहता है, जो न केवल पश्चिम एशिया बल्कि पूरी दुनिया की सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा है। हालांकि ईरान इन आरोपों को लगातार खारिज करता रहा है और कहता है कि उसका परमाणु कार्यक्रम पूरी तरह शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए है।

स्थिति तब और अधिक गंभीर हो गई, जब वार्ता और चेतावनियों के समानांतर अमेरिका ने अपने करीबी सहयोगी इजरायल के साथ मिलकर ईरान के ठिकानों पर सैन्य हमले शुरू कर दिए। यह कदम केवल एक सैन्य कार्रवाई नहीं, बल्कि पूरे क्षेत्र की शक्ति संतुलन व्यवस्था को चुनौती देने वाला निर्णय था। अमेरिका और इजरायल दोनों ही लंबे समय से ईरान को अपने लिए सबसे बड़ा रणनीतिक खतरा मानते रहे हैं। इजरायल को आशंका है कि यदि ईरान परमाणु हथियार हासिल कर लेता है, तो उसकी राष्ट्रीय सुरक्षा सीधे खतरे में पड़ जाएगी। यही कारण है कि इजरायल पहले भी ईरान के परमाणु ठिकानों पर गुप्त और प्रत्यक्ष हमले करता रहा है।

ईरान ने भी इन हमलों का तुरंत जवाब दिया और इजरायल के साथ-साथ पश्चिम एशिया में मौजूद अमेरिकी सैन्य ठिकानों को निशाना बनाना शुरू कर दिया। यह प्रतिक्रिया केवल प्रतिरोध का प्रतीक नहीं थी, बल्कि यह संदेश भी था कि ईरान अपनी संप्रभुता और सुरक्षा के लिए किसी भी हद तक जा सकता है। ईरान की सैन्य रणनीति केवल सीधी टक्कर तक सीमित नहीं है, बल्कि वह अपने क्षेत्रीय सहयोगियों के माध्यम से भी जवाबी कार्रवाई करता रहा है। इसी क्रम में लेबनान का संगठन हिजबुल्ला और यमन का हाउती समूह भी ईरान के समर्थन में सामने आ गए हैं। इन संगठनों की सक्रियता ने संघर्ष को और अधिक व्यापक और जटिल बना दिया है। इस पूरे घटनाक्रम का सबसे बड़ा खतरा यह है कि यह संघर्ष केवल तीन देशों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि पूरे पश्चिम एशिया को अपनी चपेट में ले सकता है। यह क्षेत्र पहले से ही राजनीतिक अस्थिरता, धार्मिक विभाजन और बाहरी हस्तक्षेपों से जूझता रहा है। ऐसे में यदि यह युद्ध लंबा खिंचता है, तो इसका असर सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, इराक, सीरिया और अन्य देशों पर भी पड़ सकता है। इससे क्षेत्र में पहले से मौजूद मतभेद और गहरे हो सकते हैं और एक व्यापक क्षेत्रीय युद्ध की स्थिति बन सकती है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा ईरानी जनता से अपनी सरकार को उखाड़ फेंकने की अपील ने इस संघर्ष को और अधिक खतरनाक बना दिया है। यह बयान केवल एक राजनीतिक टिप्पणी नहीं, बल्कि ईरान की आंतरिक राजनीति में सीधे हस्तक्षेप का संकेत है। ट्रंप का लक्ष्य केवल ईरान के परमाणु कार्यक्रम को समाप्त करना नहीं, बल्कि वहां सत्ता परिवर्तन भी प्रतीत होता है। इसी संदर्भ में ईरान के सर्वोच्च नेता अली खामेनेई के आवास पर हमले की खबरें भी सामने आईं, जो इस संघर्ष की गंभीरता और विस्तार को दर्शाती हैं।

यह युद्ध ऐसे समय शुरू हुआ है, जब दुनिया पहले से ही कई बड़े संघर्षों से जूझ रही है। रूस और यूक्रेन के बीच चल रहा युद्ध चार वर्षों से जारी है और इसका कोई स्पष्ट समाधान नजर नहीं आ रहा। इसके अलावा हाल के समय में अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच भी तनाव और संघर्ष की स्थिति बनी हुई है। इन सभी घटनाओं ने वैश्विक शांति और स्थिरता को पहले ही कमजोर कर दिया है। ऐसे में अमेरिका, इजरायल और ईरान के बीच का यह नया संघर्ष वैश्विक व्यवस्था के लिए और भी बड़ा खतरा बन सकता है।

इस संघर्ष का एक बड़ा प्रभाव वैश्विक अर्थव्यवस्था पर भी पड़ सकता है, विशेषकर तेल बाजार पर। पश्चिम एशिया दुनिया के सबसे बड़े तेल उत्पादक क्षेत्रों में से एक है। यदि यहां युद्ध बढ़ता है और तेल आपूर्ति बाधित होती है, तो अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतों में भारी वृद्धि हो सकती है। इसका असर केवल तेल आयात करने वाले देशों पर ही नहीं, बल्कि पूरी वैश्विक अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा। महंगे तेल का मतलब होगा महंगाई में वृद्धि, उत्पादन लागत में बढ़ोतरी और आर्थिक विकास की गति में कमी।

इस पूरे घटनाक्रम का सीधा असर भारत पर भी पड़ सकता है। भारत पश्चिम एशिया से बड़ी मात्रा में कच्चा तेल आयात करता है और यहां लाखों भारतीय काम करते हैं। यदि युद्ध की स्थिति और गंभीर होती है, तो भारत को अपने नागरिकों को सुरक्षित निकालने के लिए बड़े पैमाने पर अभियान चलाना पड़ सकता है, जैसा उसने पहले इराक, लीबिया और यूक्रेन में किया था। इसके अलावा महंगे तेल की वजह से भारत की अर्थव्यवस्था पर भी दबाव बढ़ सकता है और महंगाई में वृद्धि हो सकती है।

भारत के सामने सबसे बड़ी चुनौती अपनी संतुलित विदेश नीति को बनाए रखने की होगी। भारत के अमेरिका और इजरायल दोनों के साथ मजबूत रणनीतिक संबंध हैं, वहीं ईरान के साथ भी उसके ऐतिहासिक और आर्थिक संबंध रहे हैं। ऐसे में भारत किसी एक पक्ष का खुलकर समर्थन नहीं करना चाहेगा, बल्कि वह शांति और कूटनीति के माध्यम से समाधान की वकालत करेगा। भारत की नीति हमेशा से यह रही है कि वह अंतरराष्ट्रीय विवादों का समाधान बातचीत और शांतिपूर्ण तरीकों से चाहता है।

इस संघर्ष का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह अंतरराष्ट्रीय कानून और संप्रभुता के सिद्धांतों को भी चुनौती देता है। यदि शक्तिशाली देश अपने रणनीतिक हितों के लिए अन्य देशों पर हमला करते हैं, तो यह वैश्विक व्यवस्था के लिए खतरनाक उदाहरण बन सकता है। इससे छोटे और कमजोर देशों में असुरक्षा की भावना बढ़ सकती है और वैश्विक स्थिरता कमजोर हो सकती है।

अभियान

नकारात्मकता के दहन से आत्मबल और समृद्धि तक की आध्यात्मिक यात्रा

भारत की सनातन परंपरा में प्रत्येक त्योहार केवल उत्सव या सामाजिक आयोजन नहीं होता, बल्कि वह मनुष्य के आंतरिक जीवन, मानसिक शुद्धि और आध्यात्मिक उन्नति से गहराई से जुड़ा होता है। होली का पर्व भी इसी आध्यात्मिक परंपरा का एक महत्वपूर्ण अंग है, जिसकी शुरुआत होलिका दहन से होती है। हिंदू धर्म में होलिका दहन को बुराई, अहंकार और नकारात्मक शक्तियों के अंत तथा सत्य, आस्था और सकारात्मकता की विजय का प्रतीक माना गया है। इस दिन अग्नि प्रज्वलित कर उसकी परिक्रमा करने की परंपरा हजारों वर्षों से चली आ रही है, जो केवल धार्मिक आस्था का प्रदर्शन नहीं, बल्कि जीवन के गहरे आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों से भी जुड़ी हुई है।

होलिका दहन की परंपरा का आधार भक्त प्रह्लाद की वह प्रेरणादायक कथा है, जो यह सिखाती है कि सच्ची आस्था और ईश्वर में विश्वास व्यक्ति को हर संकट से सुरक्षित रखता है। जब अत्याचारी हिरण्यकश्यप ने अपने पुत्र प्रह्लाद की भक्ति को समाप्त करने का प्रयास किया, तब उसने अपनी बहन होलिका को आदेश दिया कि वह प्रह्लाद को गोद में लेकर अग्नि में बैठे। होलिका को अग्नि से न जलने का वरदान प्राप्त था, लेकिन जब वह अग्नि में बैठी, तो उसकी शक्ति निष्क्रिय हो गई और वह स्वयं जल गई, जबकि प्रह्लाद सुरक्षित बच गए। यह घटना केवल एक पौराणिक कथा नहीं, बल्कि एक गहरा प्रतीक है कि अहंकार, अत्याचार और नकारात्मकता का अंत निश्चित है, जबकि सच्चाई, श्रद्धा और भक्ति अंततः विजयी होती है।

इसी घटना की स्मृति में होलिका दहन किया जाता है और उसकी परिक्रमा की जाती है। परिक्रमा का अर्थ केवल अग्नि के चारों ओर घूमना नहीं है, बल्कि यह एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति अपने जीवन की नकारात्मकताओं को अग्नि में समर्पित करता है और सकारात्मक ऊर्जा को ग्रहण करता है। अग्नि को सनातन परंपरा में शुद्धि का प्रतीक माना गया है। अग्नि हर अशुद्ध तत्व को जलाकर उसे शुद्ध कर देती है। जब व्यक्ति अग्नि की परिक्रमा करता है, तो वह प्रतीकात्मक रूप से अपने भीतर के भय, क्रोध, ईर्ष्या, तनाव और नकारात्मक विचारों को समाप्त करने का संकल्प लेता है।

परिक्रमा की संख्या का भी विशेष महत्व बताया गया है। सामान्यतः तीन या सात बार परिक्रमा करना शुभ माना जाता है। तीन परिक्रमा सृष्टि के तीन मूल तत्वों—सृजन, पालन और संहार—का प्रतीक मानी जाती है। यह जीवन के संतुलन और ब्रह्मांडीय व्यवस्था के प्रति सम्मान का संकेत है। सात परिक्रमा का संबंध जीवन के सात ऊर्जा केंद्रों और सात स्तरों की शुद्धि से जोड़ा जाता है। यह माना जाता है कि श्रद्धा और विश्वास के साथ सात परिक्रमा करने से व्यक्ति के शरीर और मन की ऊर्जा संतुलित होती है, जिससे मानसिक शांति और आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

होलिका दहन की परिक्रमा का एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक पक्ष भी है। आधुनिक जीवन में तनाव, चिंता और मानसिक दबाव लगातार बढ़ते जा रहे हैं। ऐसे में यह परंपरा व्यक्ति को अपने भीतर झांकने और आत्मचिंतन का अवसर प्रदान करती है। जब व्यक्ति श्रद्धा के साथ अग्नि की परिक्रमा करता है, तो वह अपने जीवन की समस्याओं, गलतियों और नकारात्मकताओं को स्वीकार करता है और उनसे मुक्त होने का संकल्प लेता है। यह प्रक्रिया व्यक्ति के भीतर आत्मबल और सकारात्मक सोच को विकसित करती है।

इस परंपरा का एक गहरा सामाजिक महत्व भी है। होलिका दहन के समय पूरा समाज एकत्रित होता है और सामूहिक रूप से इस अनुष्ठान में भाग लेता है। यह सामूहिकता सामाजिक एकता, आपसी प्रेम और सहयोग की भावना को मजबूत करती है। यह परंपरा हमें यह सिखाती है कि समाज की शक्ति उसकी एकता में निहित होती है। जब लोग एक साथ मिलकर इस अनुष्ठान में भाग लेते हैं, तो उनके बीच आपसी संबंध मजबूत होते हैं और सामाजिक सद्भाव का विकास होता है।

होलिका दहन की परिक्रमा के साथ दान और अर्पण की परंपरा भी जुड़ी हुई है। इस दिन नई फसल के अनाज, गेहूं की बालियां या चने अग्नि में अर्पित किए जाते हैं। यह प्रकृति और अन्नदाता के प्रति आभार व्यक्त करने का प्रतीक है। यह हमें यह याद दिलाता है कि जीवन में जो कुछ भी हमें प्राप्त हुआ है, वह केवल हमारे प्रयास का परिणाम नहीं, बल्कि प्रकृति और ईश्वर की कृपा का भी फल है। इस दिन जरूरतमंदों को दान देना अत्यंत शुभ माना जाता है, क्योंकि यह करुणा, सेवा और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना को प्रकट करता है।

ज्योतिषीय दृष्टिकोण से भी होलिका दहन की परिक्रमा का विशेष महत्व बताया गया है। यह माना जाता है कि इस दिन अग्नि की ऊर्जा अत्यंत शक्तिशाली होती है, जो व्यक्ति के जीवन से नकारात्मक प्रभावों को दूर कर सकती है। श्रद्धा के साथ की गई परिक्रमा व्यक्ति के आभामंडल को शुद्ध करती है और मानसिक स्पष्टता प्रदान करती है। इससे व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आने की संभावना बढ़ जाती है।

परिक्रमा की विधि का पालन करना भी आवश्यक माना गया है। परिक्रमा शुरू करने से पहले व्यक्ति को अपने मन को शांत करना चाहिए और ईश्वर का ध्यान करना चाहिए। हाथ में जल, अक्षत या फूल लेकर अग्नि के सामने खड़े होकर प्रार्थना करना मन को एकाग्र करता है। परिक्रमा हमेशा घड़ी की दिशा में करनी चाहिए, क्योंकि यह दिशा सकारात्मक ऊर्जा के प्रवाह के अनुरूप मानी जाती है। परिक्रमा करते समय मंत्रों का जाप करना मन को स्थिर और शांत बनाता है।

परिक्रमा के बाद अग्नि देव को प्रणाम करना और अपने परिवार की सुख, शांति और समृद्धि के लिए प्रार्थना करना अत्यंत शुभ माना जाता है। यह प्रक्रिया व्यक्ति को अपने जीवन के प्रति जिम्मेदारी और कृतज्ञता की भावना से जोड़ती है। यह हमें यह सिखाती है कि जीवन में केवल भौतिक सफलता ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि मानसिक शांति और आध्यात्मिक संतुलन भी उतना ही आवश्यक है।

आधुनिक समय में, जब व्यक्ति अपने व्यस्त जीवन और भौतिक लक्ष्यों में इतना व्यस्त हो गया है कि वह अपने आंतरिक जीवन को भूलता जा रहा है, तब होलिका दहन की परिक्रमा जैसी परंपराएं उसे आत्मचिंतन और आत्मशुद्धि का अवसर प्रदान करती हैं। यह परंपरा हमें यह याद दिलाती है कि जीवन में सच्ची खुशी और शांति केवल बाहरी उपलब्धियों से नहीं, बल्कि आंतरिक संतुलन और आध्यात्मिक जागरूकता से प्राप्त होती है।

अंततः, होलिका दहन की परिक्रमा केवल एक धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि जीवन को सकारात्मक दिशा देने वाला एक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक अनुष्ठान है। यह हमें यह सिखाती है कि हमें अपने जीवन की नकारात्मकताओं को समाप्त कर सकारात्मक सोच और आस्था के साथ आगे बढ़ना चाहिए। जब हम श्रद्धा, विश्वास और कृतज्ञता के साथ इस परंपरा का पालन करते हैं, तो यह हमारे जीवन में मानसिक शांति, आत्मबल और समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करती है। यही इस पवित्र परंपरा का वास्तविक महत्व और उसका शाश्वत संदेश है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

होली पर घर वापसी की उमंग से गुलजार उधना स्टेशन स्पेशल ट्रेनों के जरिए हजारों प्रवासी श्रमिक रवाना

(जीएनएस)। डायमंड और टेक्सटाइल उद्योग के लिए देशभर में पहचान रखने वाले सूरत शहर में होली और धुलेटी के पर्व से पहले घर लौटने वाले प्रवासी श्रमिकों का उत्साह चरम पर पहुंच गया है। इस उत्साह का सबसे जीवंत दृश्य शहर के उधना रेलवे स्टेशन पर देखने को मिला, जहां रविवार सुबह से ही हजारों यात्री अपने परिवार, बच्चों और भारी सामान के साथ अपने गृह राज्यों के लिए रवाना होने के लिए जुटे। स्टेशन परिसर में यात्रियों की भीड़ इतनी अधिक थी कि पूरा क्षेत्र मानो उत्तर भारत के किसी बड़े जंक्शन में तब्दील हो गया हो। हर ओर अपने गांव लौटने की खुशी, परिवार से मिलने की उत्सुकता और त्योहार साथ मनाने का उत्साह स्पष्ट दिखाई दे रहा था। रेलवे प्रशासन द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों के अनुसार, होली के अवसर पर यात्रियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए पांच विशेष होली स्पेशल ट्रेनों का संचालन किया गया, जिनके माध्यम से 18,000 से अधिक यात्रियों को उनके गंतव्य के लिए रवाना किया गया। इन ट्रेनों में विशेष रूप से उत्तर प्रदेश और बिहार जाने वाले यात्रियों की संख्या अधिक रही, क्योंकि सूरत में बड़ी संख्या में इन राज्यों के प्रवासी श्रमिक टेक्सटाइल, डायमंड और निर्माण उद्योग में कार्यरत हैं। त्योहारों के समय इन श्रमिकों का अपने घर लौटना एक परंपरा बन चुका है, और इस वर्ष भी वही परंपरा पूरे उत्साह के साथ देखने को मिली।

स्टेशन पर यात्रियों की भीड़ सुबह से ही बढ़ने लगी थी। कई यात्री रात से ही स्टेशन पहुंच गए थे ताकि उन्हें ट्रेन में आसानी से स्थान मिल सके। प्लेटफॉर्म पर यात्रियों की लंबी कतारें, बच्चों की चहल-पहल, सामान से भरे बैग और चेहरों पर घर लौटने की खुशी का मिश्रित दृश्य दिखाई दे रहा था। कई परिवार एक साथ यात्रा कर रहे थे, जबकि कुछ श्रमिक अपने साथियों के साथ समूह में अपने गांवों के लिए रवाना हो रहे थे। इस दौरान स्टेशन का माहौल पूरी तरह भावनात्मक और उत्साहपूर्ण बना रहा।

विशेष रूप से मजदूर वर्ग के लिए संचालित अंत्योदय एक्सप्रेस में सबसे अधिक भीड़ देखी गई। इस ट्रेन के

जनरल कोच पूरी तरह भर गए और कई यात्रियों को खड़े होकर यात्रा करनी पड़ी। इसके अलावा आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित अमृत भारत एक्सप्रेस में भी यात्रियों की भारी भीड़ उमड़ी। इन ट्रेनों के माध्यम से यात्रियों को सुरक्षित और समय पर उनके गंतव्य तक पहुंचाने के लिए रेलवे प्रशासन ने विशेष व्यवस्थाएं की थीं। यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए अतिरिक्त कोच और रैक को स्टैंडबाय पर रखा गया, ताकि आवश्यकता पड़ने पर तुरंत उनका उपयोग किया जा सके।

भीड़ को नियंत्रित करने और यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए रेलवे सुरक्षा बल और जीआरपी के जवानों को विशेष रूप से तैनात किया गया था। सुरक्षा कर्मियों ने यात्रियों को व्यवस्थित रूप से ट्रेन में चढ़ने और उतरने में सहायता की तथा प्लेटफॉर्म पर अनुशासन बनाए रखा। इसके साथ ही रेलवे अधिकारियों और कर्मचारियों ने भी लगातार स्थिति पर नजर रखी और यात्रियों को आवश्यक जानकारी और सहायता प्रदान की। रेलवे प्रशासन द्वारा यात्रियों की सुविधा के लिए स्टेशन पर कई आवश्यक व्यवस्थाएं भी की गई थीं। भीषण गर्मी को ध्यान में रखते हुए पीने के पानी की पर्याप्त व्यवस्था की गई थी, ताकि यात्रियों को किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े। इसके अलावा प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं के लिए मेडिकल टीम और हेल्प डेस्क भी स्थापित किए गए थे, जहां यात्रियों को आवश्यक सहायता और जानकारी प्रदान की जा रही थी। इन व्यवस्थाओं के कारण यात्रियों को बड़ी संख्या में होने के बावजूद किसी प्रकार की अव्यवस्था या अफरा-तफरी का सामना नहीं करना पड़ा। घर लौट रहे यात्रियों के चेहरों पर अपने परिवार से मिलने की खुशी साफ दिखाई दे रही थी। एक यात्री ने अपनी भावनाएं व्यक्त करते हुए कहा कि सूरत उन्हें रोजगार और सम्मान देता है, लेकिन होली जैसे त्योहार अपने गांव और परिवार के साथ मनाने का जो आनंद है, वह कहीं और नहीं मिल सकता। उन्होंने रेलवे प्रशासन द्वारा चलाई गई विशेष ट्रेनों के लिए आभार व्यक्त किया और कहा कि इससे उन्हें समय पर और सुरक्षित तरीके से अपने घर पहुंचने में मदद मिली।

सूरत शहर में टेक्सटाइल और निर्माण क्षेत्र से जुड़े लाखों श्रमिक कार्यरत हैं, जो देश के विभिन्न हिस्सों, विशेष रूप से उत्तर प्रदेश और बिहार से यहां आए हैं। होली, दिवाली और छठ जैसे प्रमुख त्योहारों के दौरान इन श्रमिकों का अपने गांव लौटना एक सामान्य लेकिन अत्यंत महत्वपूर्ण सामाजिक और सांस्कृतिक प्रक्रिया बन चुका है। इसे देखते हुए रेलवे प्रशासन ने इस बार पहले से ही विस्तृत योजना बनाकर अतिरिक्त ट्रेनों और सुविधाओं की व्यवस्था की, जिससे यात्रियों को अधिक सुविधा मिल सके और भीड़ को व्यवस्थित ढंग से संभाला जा सके।

रेलवे अधिकारियों का कहना है कि होली के मद्देनज़र अगले कुछ दिनों तक उधना और सूरत रेलवे स्टेशनों पर इसी तरह यात्रियों की भीड़ बनी रहने की संभावना है। यात्रियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए रेलवे प्रशासन पूरी तरह सतर्क है और आवश्यकता पड़ने पर अतिरिक्त स्पेशल ट्रेनों का संचालन भी किया जाएगा। इस पूरी व्यवस्था का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि प्रत्येक यात्री सुरक्षित, सुविधाजनक और सम्मानजनक तरीके से अपने घर पहुंच सके और अपने परिवार के साथ त्योहार का आनंद ले सके।

होली जैसे पारंपरिक और भावनात्मक त्योहार के अवसर पर प्रवासी श्रमिकों की यह घर वापसी न केवल उनकी भावनाओं को दर्शाती है, बल्कि यह भी बताती है कि त्योहार भारतीय समाज में परिवार और संबंधों के महत्व को और अधिक मजबूत बनाते हैं। रेलवे प्रशासन द्वारा किए गए पुख्ता इंतजाम और विशेष ट्रेनों के संचालन ने हजारों परिवारों की इस यात्रा को आसान और यादगार बना दिया है, जिससे होली का यह पर्व उनके जीवन में और अधिक खुशियां लेकर आएगा।

फाल्गुन पूर्णिमा पर लगेगा वर्ष का पहला चंद्र ग्रहण, सूतक काल के साथ आध्यात्मिक साधना का विशेष संयोग

(जीएनएस)। डायमंड सिटी सूरत सहित पूरे देश में वर्ष 2026 का पहला चंद्र ग्रहण 3 मार्च, मंगलवार को फाल्गुन मास की पूर्णिमा तिथि पर लगने जा रहा है। यह खगोलीय घटना केवल वैज्ञानिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि धार्मिक, ज्योतिषीय और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जा रही है। विशेष बात यह है कि यह चंद्र ग्रहण भारत में स्पष्ट रूप से दिखाई देगा, जिसके कारण इसका सूतक काल पूर्ण रूप से मान्य रहेगा और धार्मिक मान्यताओं का पालन करने वाले श्रद्धालु इसके नियमों का विशेष रूप से पालन करेंगे।

ज्योतिष एवं वास्तु हस्तरेखा विशेषज्ञ गोविंद मूंदड़ा के अनुसार पंचांग के आधार पर चंद्र ग्रहण भारतीय समयानुसार दोपहर 3 बजकर 20 मिनट से प्रारंभ होकर शाम 6 बजकर 47 मिनट तक रहेगा। इस प्रकार ग्रहण की कुल अवधि लगभग 3 घंटे 27 मिनट की होगी। चंद्र ग्रहण शुरू होने से ठीक 9 घंटे पूर्व सूतक काल आरंभ हो जाता है, इसलिए सूतक काल 3 मार्च की सुबह 6 बजकर 20 मिनट से प्रभावी होकर ग्रहण समाप्ति तक जारी रहेगा। इस अवधि को धार्मिक दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील और प्रभावशाली समय माना जाता है।

भारतीय सनातन परंपरा में चंद्र ग्रहण को केवल एक खगोलीय घटना नहीं, बल्कि आध्यात्मिक ऊर्जा और आत्मशुद्धि का विशेष अवसर माना जाता है। फाल्गुन पूर्णिमा का दिन पहले से ही धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि यह दिन भगवान की उपासना, साधना और भक्ति के लिए अत्यंत शुभ माना जाता है। जब इसी दिन चंद्र ग्रहण का संयोग बनता है,

तो इसका महत्व और अधिक बढ़ जाता है। ऐसी मान्यता है कि ग्रहण काल के दौरान वातावरण में विशेष प्रकार की ऊर्जा सक्रिय होती है, जिससे इस समय किया गया मंत्र जाप, ध्यान, तप और साधना सामान्य दिनों की तुलना में कई गुना अधिक फलदायी होता है।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार ग्रहण काल के दौरान भगवान शिव की आराधना विशेष रूप से लाभकारी मानी जाती है। श्रद्धालुओं को महामृत्युंजय मंत्र “ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्” का जाप करना चाहिए, जिससे मानसिक शांति, स्वास्थ्य और सकारात्मक ऊर्जा की प्राप्ति होती है। इसके साथ ही चंद्रमा को शांत करने के लिए “ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चंद्रमसे नमः” मंत्र का जाप करना अत्यंत प्रभावशाली माना गया है। अपने इष्टदेव का स्मरण, धार्मिक ग्रंथों का पाठ और ध्यान करने से मन की शुद्धि होती है और जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आने की संभावना बढ़ती है। ग्रहण समाप्त होने के बाद स्नान करना और घर में शुद्धि करना धार्मिक परंपरा का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। श्रद्धालुओं को ग्रहण के बाद स्नान कर अपने घर और मंदिर में गंगाजल का छिड़काव करना चाहिए, जिससे नकारात्मक ऊर्जा समाप्त होकर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। इसके साथ ही ग्रहण के बाद दान करना अत्यंत पुण्यदायी माना गया है। चावल, दूध, घी, सफेद वस्त्र और चांदी का दान करने से चंद्र दोष शांत होते हैं और व्यक्ति को मानसिक शांति तथा समृद्धि की प्राप्ति होती है। यह भी मान्यता है कि ग्रहण के बाद दान करने से पितरों का आशीर्वाद प्राप्त होता है और जीवन में आने वाली बाधाएं दूर होती हैं।

ग्रहण काल के दौरान कुछ विशेष सावधानियां बरतना भी आवश्यक माना गया है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इस अवधि में भोजन करना वर्जित माना जाता है, क्योंकि ग्रहण के दौरान वातावरण में सूक्ष्म परिवर्तन होते हैं, जिनका प्रभाव भोजन पर भी पड़ सकता है। यदि ग्रहण से पहले भोजन तैयार किया गया हो, तो उसमें तुलसी के पत्ते डाल देना चाहिए, जिससे उसकी पवित्रता और सकारात्मक ऊर्जा बनी रहती है। तुलसी को अत्यंत पवित्र और ऊर्जा शुद्ध करने वाला पौधा माना जाता है, इसलिए इसका उपयोग ग्रहण के दौरान विशेष महत्व रखता है।

ग्रहण काल में मंदिर के कपाट बंद रखना और देवी-देवताओं की प्रतिमाओं को स्पर्श न करना भी धार्मिक नियमों का हिस्सा है। कई लोग इस दौरान मंदिर की प्रतिमाओं को स्वच्छ वस्त्र से ढक देते हैं, जिससे ग्रहण का प्रभाव उन पर न पड़े। इसके अलावा तुलसी, पीपल और बरगद जैसे पवित्र वृक्षों को भी ग्रहण काल में स्पर्श करने से बचने की सलाह दी जाती है। यह समय मानसिक शांति बनाए रखने और आत्मचिंतन करने के लिए अत्यंत उपयुक्त माना जाता है, इसलिए लोगों को इस दौरान नकारात्मक विचारों, क्रोध और कटु वचनों से दूर रहना चाहिए।

चंद्र ग्रहण का प्रभाव केवल धार्मिक मान्यताओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के मानसिक और भावनात्मक स्तर पर भी प्रभाव डाल सकता है। ज्योतिषीय दृष्टिकोण से चंद्रमा मन, भावनाओं और मानसिक स्थिति का कारक ग्रह माना जाता है। इसलिए ग्रहण के दौरान व्यक्ति को मानसिक संतुलन बनाए रखने, ध्यान करने और सकारात्मक सोच रखने की सलाह दी जाती है। यह समय आत्मविश्लेषण और अपने जीवन के उद्देश्यों पर विचार करने का भी अवसर प्रदान करता है। इस प्रकार वर्ष 2026 का पहला चंद्र ग्रहण श्रद्धालुओं के लिए एक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक अवसर लेकर आ रहा है। श्रद्धा, संयम, साधना और सकारात्मक सोच के साथ इस काल का सदुपयोग करने से व्यक्ति अपने जीवन में मानसिक शांति, आध्यात्मिक उन्नति और सकारात्मक ऊर्जा का अनुभव कर सकता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार ग्रहण काल आत्मशुद्धि और ईश्वर से जुड़ने का विशेष समय होता है, इसलिए इसे भय या अंधविश्वास के बजाय श्रद्धा और जागरूकता के साथ ग्रहण करना ही सबसे श्रेष्ठ मार्ग माना गया है।

नागरिक सुरक्षा दिवस पर सूरत होमगाड्र्स का संदेश: स्वस्थ शरीर और सजग नागरिक ही आपदा से बचाव की सबसे बड़ी शक्ति

(जीएनएस)। डायमंड सिटी सूरत में विश्व नागरिक सुरक्षा दिवस के अवसर पर सूरत शहर होमगाड्र्स ए-ज़ोन एवं महिला यूनिट द्वारा एक विशेष जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें “स्वास्थ्य ही धन है” विषय को केंद्र में रखते हुए नागरिक सुरक्षा, स्वास्थ्य जागरूकता और आपदा प्रबंधन के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला गया। मानपुरा स्थित बहुमंजिला भवन में आयोजित इस कार्यक्रम में होमगाड्र्स के जवानों, महिला यूनिट की सदस्याओं, अधिकारियों तथा नागरिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और स्वास्थ्य तथा सुरक्षा के प्रति जागरूक रहने का संकल्प लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत अनुशासित परेड के साथ हुई, जिसमें होमगाड्र्स के जवानों ने अपनी तत्परता, अनुशासन और सेवा भावना का परिचय दिया। परेड के बाद आयोजित जागरूकता सत्र में नागरिक सुरक्षा की भूमिका, आपातकालीन परिस्थितियों में जिम्मेदार नागरिक बनने की आवश्यकता और शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के महत्व पर विस्तार से चर्चा की गई। इस अवसर पर सूरत शहर के कमांडेंट डॉ. प्रफुल्ल शिरोया ने विश्व नागरिक सुरक्षा दिवस के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह दिवस प्रत्येक वर्ष 1 मार्च को नागरिक सुरक्षा की भूमिका को सम्मान देने और लोगों में आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से मनाया जाता है।

उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि आज के समय में प्राकृतिक आपदाओं, दुर्घटनाओं और आपातकालीन परिस्थितियों की संभावनाएं लगातार बढ़ रही हैं, ऐसे में नागरिक सुरक्षा की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। उन्होंने बताया कि

नागरिक सुरक्षा केवल सरकारी एजेंसियों की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि प्रत्येक नागरिक का भी यह कर्तव्य है कि वह स्वयं को और अपने आसपास के लोगों को सुरक्षित रखने के लिए जागरूक और तैयार रहे। उन्होंने होमगाड्र्स की भूमिका को समाज की सुरक्षा का मजबूत स्तंभ बताते हुए कहा कि होमगाड्र्स के जवान संकट की घड़ी में पुलिस और प्रशासन के साथ मिलकर महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

कार्यक्रम की मुख्य वक्ता के रूप में सिविल अस्पताल के रेस्पिरेटरी विभाग की प्रमुख, इंडियन मेडिकल एसोसिएशन की नेशनल जॉइंट सेक्रेटरी और वीर नर्मद साउथ गुजरात यूनिवर्सिटी की सेनेट सदस्य डॉ. पारुल वडगामा ने स्वास्थ्य के महत्व पर विस्तार से मार्गदर्शन दिया। उन्होंने कहा कि स्वस्थ शरीर ही व्यक्ति की सबसे बड़ी पूंजी है, क्योंकि यदि व्यक्ति शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं है, तो जीवन के अन्य सभी संसाधन और सुविधाएं भी उसका पूर्ण आनंद नहीं दे सकते। उन्होंने कहा कि आज की भागदौड़ भरी जीवनशैली, अनियमित खानपान और तनाव के कारण लोगों में कई प्रकार की बीमारियां तेजी से बढ़ रही हैं, इसलिए स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहना अत्यंत आवश्यक हो गया है।

उन्होंने नियमित व्यायाम, संतुलित आहार, पर्याप्त नींद और स्वच्छता को स्वस्थ जीवन की आधारशिला बताया। उन्होंने कहा कि प्रतिदिन कम से कम 30 मिनट का व्यायाम शरीर को मजबूत बनाता है और कई गंभीर बीमारियों से बचाव करता है। इसके साथ ही मानसिक स्वास्थ्य को भी उतना ही महत्वपूर्ण बताते हुए उन्होंने तनाव से बचने, सकारात्मक सोच रखने और योग तथा ध्यान को जीवन का हिस्सा बनाने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि स्वस्थ नागरिक ही एक मजबूत और सुरक्षित समाज का निर्माण कर सकते हैं।

महिलाओं के स्वास्थ्य पर विशेष जोर देते हुए उन्होंने ब्रेस्ट कैंसर और सर्वाइकल कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों के प्रति जागरूकता की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि समय पर जांच और जागरूकता के माध्यम से इन बीमारियों से बचाव संभव है। उन्होंने विशेष रूप से पाप स्मीयर टेस्ट की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह जांच सर्वाइकल कैंसर का समय रहते पता लगाने में अत्यंत सहायक होती है। उन्होंने यह भी जानकारी दी कि भारत सरकार द्वारा 9 से 14 वर्ष की बालिकाओं के लिए सर्वाइकल कैंसर से बचाव हेतु मुफ्त टीकाकरण अभियान चलाया जा रहा है, जिसका लाभ प्रत्येक परिवार को अवश्य लेना चाहिए।

कार्यक्रम के दौरान नागरिक सुरक्षा और आपदा प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर भी चर्चा की गई। अधिकारियों ने बताया कि किसी भी आपदा या दुर्घटना के समय घबराने के बजाय संयम और समझदारी से कार्य करना चाहिए। प्राथमिक उपचार की जानकारी, आपातकालीन सेवाओं से संपर्क और आसपास के लोगों की सहायता करना एक जिम्मेदार नागरिक की पहचान है। उन्होंने बताया कि होमगाड्र्स संगठन का मुख्य उद्देश्य नागरिकों को सुरक्षा और सेवा प्रदान करना तथा आपदा के समय राहत कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाना है। कार्यक्रम का सफल संचालन सेकंड कमांडेंट प्रणव ठाकोर द्वारा किया गया, जबकि ए-ज़ोन ओसी सुनील मैसूरिया, महिला ओसी धोतृबेन शिंदे, एनसीओ और होमगाड्र्स के अन्य सदस्यों ने आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित सभी होमगाड्र्स और नागरिकों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहने, नियमित व्यायाम करने और आपदा के समय सतर्क और जिम्मेदार नागरिक की भूमिका निभाने का संकल्प दिलाया गया।

इस आयोजन ने न केवल स्वास्थ्य और नागरिक सुरक्षा के महत्व को उजागर किया, बल्कि यह संदेश भी दिया कि एक स्वस्थ और जागरूक समाज ही सुरक्षित और मजबूत राष्ट्र की नींव होता है। कार्यक्रम के माध्यम से उपस्थित सभी लोगों को यह समझने का अवसर मिला कि स्वास्थ्य और सुरक्षा एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, और यदि नागरिक शारीरिक रूप से स्वस्थ और मानसिक रूप से मजबूत होंगे, तो वे किसी भी आपदा या चुनौती का सामना अधिक प्रभावी ढंग से कर सकेंगे। इस प्रकार विश्व नागरिक सुरक्षा दिवस पर आयोजित यह कार्यक्रम समाज में जागरूकता और जिम्मेदारी की भावना को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ।

फूलों की खुशबू और व्यापारिक एकता के रंगों से सजा आढ़तिया कपड़ा एसोसिएशन का भव्य होली स्नेह मिलन

(जीएनएस)। टेक्सटाइल नगरी सूरत में फाल्गुन मास के उल्लास और रंगों की छटा के बीच आढ़तिया कपड़ा एसोसिएशन द्वारा आयोजित होली स्नेह मिलन एवं फागुन महोत्सव ने व्यापारिक जगत और सामाजिक जीवन में नई ऊर्जा का संचार किया। मानदरवाजा स्थित राजहंस इम्पीरिया परिसर में शनिवार, 28 फरवरी 2026 को आयोजित इस भव्य समारोह में रंग, संगीत, परंपरा और व्यापारिक एकता का अद्भुत संगम देखने को मिला। दोपहर 2 बजे से शाम 6 बजे तक चले इस आयोजन में लगभग एक हजार से अधिक व्यापारियों, पदाधिकारियों और गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति ने पूरे वातावरण को उत्सवमय बना दिया।

आढ़तिया कपड़ा एसोसिएशन ‘आकाश’ द्वारा आयोजित यह होली स्नेह मिलन केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि दशकों से चली आ रही व्यापारिक परंपरा, आपसी विश्वास और सामाजिक समरसता का जीवंत उदाहरण बनकर सामने आया। पिछले 68 वर्षों से लगातार आयोजित हो रहे इस पारंपरिक समारोह ने न केवल सूरत के व्यापारिक इतिहास को मजबूत किया है, बल्कि देशभर की विभिन्न कपड़ा मंडियों से जुड़े व्यापारियों को एक मंच पर जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य भी किया है। इस अवसर पर राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, मुंबई, अहमदाबाद, जयपुर, लुधियाना और अन्य प्रमुख व्यापारिक

केंद्रों से आए व्यापारियों ने भाग लेकर इस आयोजन की गरिमा को और भी बढ़ा दिया।

समारोह का सबसे आकर्षक और भावनात्मक क्षण फूलों की होली रहा, जिसमें उपस्थित व्यापारियों और अतिथियों ने एक-दूसरे पर पुष्प वर्षा कर प्रेम, सौहार्द और भाईचारे का संदेश दिया। बिना किसी भेदभाव और औपचारिकता के सभी लोगों ने एक साथ मिलकर फूलों से होली खेली, जिससे पूरा वातावरण सुगंध और उल्लास से भर गया। यह दृश्य न केवल रंगों का उत्सव था, बल्कि आपसी विश्वास, सम्मान और एकता का प्रतीक भी बन गया।

एसोसिएशन के अध्यक्ष प्रहलाद अग्रवाल ने इस अवसर पर अपने संबोधन में कहा कि होली स्नेह मिलन जैसे आयोजन व्यापारिक संबंधों को मजबूत करने के साथ-साथ सामाजिक जुड़ाव को भी सुदृढ़ करते हैं। उन्होंने कहा कि जब देशभर की विभिन्न कपड़ा मंडियों से जुड़े व्यापारी एक मंच पर मिलते हैं, तो यह केवल एक उत्सव नहीं होता, बल्कि अनुभवों के आदान-प्रदान, नए संबंधों के निर्माण और व्यापारिक सहयोग के नए अवसरों का माध्यम भी बनता है। उन्होंने यह भी कहा कि आढ़तिया कपड़ा एसोसिएशन का उद्देश्य केवल व्यापार तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज में एकता, सहयोग और सांस्कृतिक परंपराओं को जीवित रखना भी इसकी प्राथमिकता है।

समारोह के दौरान आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने पूरे माहौल को और भी जीवंत बना दिया। राजस्थान और हरियाणा से आए लोक कलाकारों ने अपनी पारंपरिक प्रस्तुतियों से उपस्थित जनसमूह को मंत्रमुग्ध कर दिया। जयपुर के प्रसिद्ध लोकगायक और कलाकारों ने फागुन और होली से जुड़े पारंपरिक लोकगीत प्रस्तुत किए, जिनकी मधुर धुनों पर उपस्थित लोग झूम उठे। राजस्थान का प्रसिद्ध घूमर नृत्य कार्यक्रम का विशेष आकर्षण रहा, जिसमें कलाकारों ने रंग-बिरंगी पारंपरिक वेशभूषा में शानदार प्रस्तुति देकर फागुनी उल्लास को चरम पर पहुंचा दिया। लोकसंगीत और नृत्य की प्रस्तुतियों ने न केवल मनोरंजन किया, बल्कि भारतीय संस्कृति की समृद्ध परंपराओं को भी जीवंत रूप में प्रस्तुत किया।

समारोह में पारंपरिक आतिथ्य सत्कार की भी विशेष व्यवस्था की गई थी। अतिथियों के लिए ठंडाई, पारंपरिक मिठाइयों और स्वादिष्ट अल्पाहार की उत्कृष्ट व्यवस्था की गई, जिसका सभी ने आनंद लिया। यह आयोजन केवल सांस्कृतिक कार्यक्रमों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसमें व्यापारिक संवाद, पुराने संबंधों को पुनर्जीवित करने और नए व्यावसायिक अवसरों पर चर्चा का भी महत्वपूर्ण मंच प्रदान किया गया।

इस भव्य आयोजन में सामाजिक, प्रशासनिक और राजनीतिक क्षेत्र की अनेक प्रमुख हस्तियों की गरिमामयी उपस्थिति भी देखने को मिली। सूरत के उपमहापौर, पुलिस आयुक्त और अन्य प्रशासनिक अधिकारियों के साथ-साथ विभिन्न व्यापारिक संगठनों, टेक्सटाइल मिलों, वीवर एसोसिएशनों और टेक्सटाइल मार्केटों के पदाधिकारियों ने समारोह में भाग लेकर आयोजन की गरिमा को बढ़ाया। उनकी उपस्थिति ने इस आयोजन को और भी प्रतिष्ठित बना दिया।

समारोह का एक भावनात्मक और विशेष क्षण वह भी रहा जब एसोसिएशन के अध्यक्ष प्रहलाद अग्रवाल के जन्मदिन के अवसर पर केक काटकर उन्हें शुभकामनाएं दी गईं। इस अवसर पर उपस्थित सभी सदस्यों और अतिथियों ने उन्हें बधाई दी और उनके नेतृत्व में एसोसिएशन की निरंतर प्रगति की कामना की। इस आयोजन ने न केवल होली के रंगों की खुशियों को साझा किया, बल्कि व्यापारिक समुदाय के बीच एकता, सहयोग और भाईचारे के मजबूत संदेश को भी सुदृढ़ किया।

आढ़तिया कपड़ा एसोसिएशन द्वारा आयोजित यह होली स्नेह मिलन समारोह यह दर्शाता है कि सूरत का व्यापारिक समुदाय केवल आर्थिक गतिविधियों तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों को भी समान महत्व देता है। इस आयोजन ने एक बार फिर यह सिद्ध कर दिया कि परंपरा, संस्कृति और व्यापार जब एक साथ मिलते हैं, तो समाज में सकारात्मक ऊर्जा, विश्वास और एकता का सशक्त वातावरण निर्मित होता है। फूलों की खुशबू, लोकसंगीत की मधुरता और व्यापारिक एकता के संदेश के साथ संपन्न हुआ यह समारोह सूरत के व्यापारिक और सामाजिक जीवन में एक यादगार अध्याय बन गया।

होली पर स्वदेशी उत्पादों की जबरदस्त मांग से बाजारों में आई रौनक, 80 हजार करोड़ से अधिक कारोबार की उम्मीद

(जीएनएस)। रंगों और उत्साह के पर्व होली के आगमन के साथ ही देशभर के बाजारों में खरीदारी की रफ्तार तेज हो गई है और इस बार विशेष रूप से स्वदेशी उत्पादों की मांग ने व्यापारिक गतिविधियों को नई ऊंचाई पर पहुंचा दिया है। राजधानी नई दिल्ली सहित देश के प्रमुख महानगरों, औद्योगिक शहरों, कस्बों और ग्रामीण क्षेत्रों में थोक और खुदरा बाजार पूरी तरह गुलजार नजर आ रहे हैं। व्यापारिक संगठनों का अनुमान है कि इस वर्ष होली के अवसर पर लगभग 80 हजार करोड़ रुपये से अधिक का कारोबार होने की संभावना है, जो न केवल बाजार की मजबूती का संकेत है, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था में त्योहारों की महत्वपूर्ण भूमिका को भी दर्शाता है।

इस वर्ष बाजार की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह रही कि उपभोक्ताओं का रुझान तेजी से भारत में निर्मित उत्पादों की ओर बढ़ा है। यह बदलाव केवल एक अस्थायी प्रवृत्ति नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा और स्वदेशी उत्पादों के प्रति बढ़ते विश्वास का प्रमाण है। व्यापारियों के अनुसार पहले जहां विदेशी उत्पादों का दबदबा रहता था, वहीं इस बार स्थानीय कारीगरों, छोटे उद्योगों और घरेलू विनिर्माण इकाइयों द्वारा बनाए गए उत्पादों की मांग में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। इससे न केवल व्यापारिक गतिविधियों को गति मिली है, बल्कि लाखों छोटे व्यापारियों और कारीगरों के लिए नए अवसर भी उत्पन्न हुए हैं।

Confederation of All India Traders (कैट) के राष्ट्रीय महामंत्री और चांदनी चौक से सांसद प्रवीण खंडेलवाल ने इस संबंध में कहा कि होली का त्योहार देश के लघु उद्योगों, स्टार्टअप, कारीगरों और घरेलू विनिर्माण इकाइयों के लिए एक बड़ा आर्थिक अवसर लेकर आता है। उन्होंने बताया कि इस वर्ष महानगरों से लेकर छोटे शहरों और गांवों तक बाजारों में अभूतपूर्व उत्साह देखने को मिल रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि स्वदेशी उत्पादों के प्रति उपभोक्ताओं का बढ़ता विश्वास देश की आर्थिक आत्मनिर्भरता को मजबूत करने की दिशा में एक सकारात्मक संकेत है।

रंगों के बाजार में इस बार विशेष रूप से हर्बल और ऑर्गेनिक उत्पादों की मांग में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। उपभोक्ता अब स्वास्थ्य और पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक हो गए हैं, जिसके कारण वे रासायनिक तत्वों से मुक्त और प्राकृतिक अवयवों से तैयार रंगों को प्राथमिकता दे रहे हैं। गुलाल, अबीर और अन्य रंगों के हर्बल विकल्प छोटे पैकेट से लेकर बड़े पैक में उपलब्ध हैं, जिससे हर वर्ग के उपभोक्ताओं के लिए विकल्प मौजूद हैं। इन उत्पादों के निर्माण में फूलों, प्राकृतिक रंगद्रव्यों और जैविक तत्वों का उपयोग किया जा रहा है, जिससे त्वचा को नुकसान नहीं पहुंचता और पर्यावरण भी सुरक्षित रहता है।

पिचकारियों और जल खिलौनों का बाजार भी इस बार पूरी तरह सक्रिय नजर आ रहा है। विभिन्न आकार, डिजाइन और आधुनिक तकनीक से युक्त पिचकारियां बच्चों और युवाओं के बीच विशेष आकर्षण का केंद्र बनी हुई हैं। कार्टून कैरेक्टर, सुपरहीरो और आकर्षक रंगों से सजी पिचकारियां बाजार में उपलब्ध हैं, जो बच्चों के उत्साह को और बढ़ा रही हैं। इसके अलावा उच्च दबाव वाली पंप पिचकारियां और विशेष डिजाइन वाले जल खिलौने भी इस बार खूब बिक रहे हैं। इन उत्पादों का निर्माण मुख्य रूप से देश के छोटे और मध्यम उद्योगों द्वारा किया जा रहा है, जिससे स्थानीय उद्योगों को भी लाभ मिल रहा है।

परिधान बाजार में भी होली की विशेष झलक देखने को मिल रही है। होली-थीम वाले टी-शर्ट, कुर्ते, स्कार्फ और अन्य कैजुअल वस्त्रों की मांग में तेजी आई है। इन परिधानों पर रंग-बिरंगे प्रिंट, पारंपरिक डिजाइन और आकर्षक स्लोगन उपभोक्ताओं को आकर्षित कर रहे हैं। विशेष रूप से युवाओं के बीच ऐसे परिधानों की लोकप्रियता बढ़ी है, जिससे फैशन उद्योग को भी नई गति मिली है। कपड़ा उद्योग से जुड़े व्यापारियों का कहना है कि होली के अवसर पर बिक्री में हुई वृद्धि से उन्हें आर्थिक मजबूती मिली है और आने वाले समय में भी सकारात्मक व्यापारिक संभावनाएं दिखाई दे रही हैं।

मिठाई, नमकीन और अन्य खाद्य पदार्थों के बाजार में भी जबरदस्त तेजी देखी जा रही है। होली मिलन समारोह, सामाजिक कार्यक्रमों और पारिवारिक आयोजनों के कारण मिठाई और स्नैक्स की मांग में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। गुजिया, मठरी, नमकीन, लड्डू और अन्य पारंपरिक व्यंजनों की बिक्री में बढ़ोतरी से मिठाई उद्योग से जुड़े हजारों लोगों को रोजगार के अवसर मिले हैं। छोटे स्तर पर काम करने वाले कारीगर, हलवाई और खाद्य विक्रेताओं को भी इस अवसर पर अच्छी आय प्राप्त हो रही है।

गुजरात बनेगा भारत का 'गेटवे टू सिलिकॉन' : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गांधीनगर में 'गुजरात सेमीकनेक्ट कॉन्फ्रेंस 2026' का शानदार शुभारंभ किया

▸▸ केंद्रीय आईटी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव, उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अर्जुन मोढवाडिया और देश-विदेश के सेमीकंडक्टर इंडस्ट्रीज के दिग्गजों की विशेष उपस्थिति

▸▸ गुजरात नीतिगत स्थिरता, पारदर्शिता, ईज ऑफ डूइंग बिजनेस तथा विकास के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति के साथ सेमीकंडक्टर और चिप मैन्युफैक्चरिंग में तेजी से आगे बढ़ रहा है : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▸▸ मुख्यमंत्री और केंद्रीय मंत्री सहित महानुभावों ने राज्य की नई 'साइंस, टेक्नोलॉजी एंड इनोवेशन-एसटीआई 2026-31' नीति का अनावरण किया

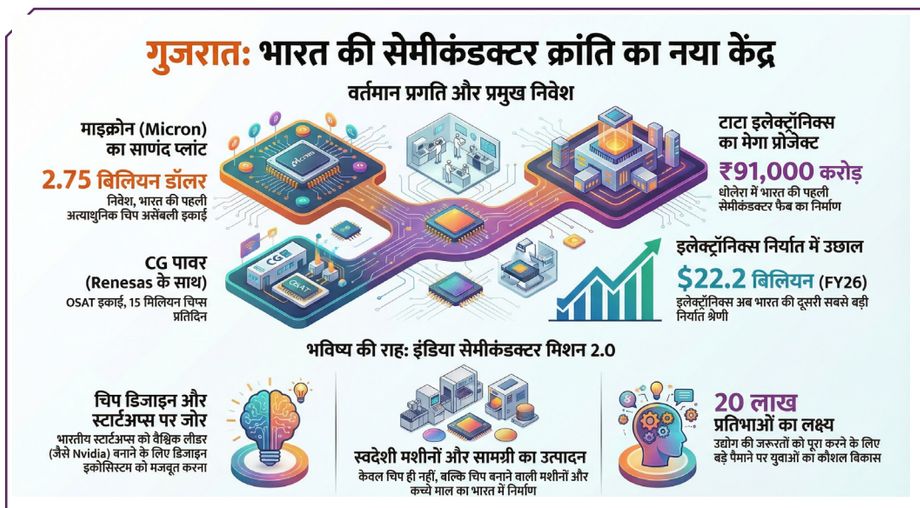

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र **जीएनएस)**। पटेल ने रविवार को गांधीनगर स्थित महात्मा मंदिर में गुजरात सेमीकनेक्ट कॉन्फ्रेंस 2026 का उद्घाटन करते हुए कहा कि गुजरात नीतिगत स्थिरता, पारदर्शिता, ईज ऑफ डूइंग बिजनेस और विकास के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति के साथ सेमीकंडक्टर और चिप मैन्युफैक्चरिंग में तेजी से आगे बढ़ रहा है। यह कॉन्फ्रेंस देश के ग्रोथ इंजन गुजरात को टेक इंजन बनाने का स्पष्ट संकेत देती है।

इस संदर्भ में उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में भारत अब हार्डवेयर के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान सशक्त कर रहा है और 'इंडिया इज रेडी, इंडिया इज रिलायबल एंड इंडिया डिलीवर्स' का जो विश्वास उन्होंने दिलाया है, उसे इस गुजरात सेमीकनेक्ट कॉन्फ्रेंस के जरिए पूरा करने की मंशा है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'विकसित भारत@2047' और 'आत्मनिर्भर भारत' के संकल्प को साकार करने की दिशा में गुजरात ने एक और ऐतिहासिक कदम उठाया है। इसके अंतर्गत गांधीनगर के महात्मा मंदिर में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की अध्यक्षता में 'गुजरात सेमीकनेक्ट कॉन्फ्रेंस 2026' का भव्य प्रारंभ किया गया।

इस गरिमापूर्ण अवसर पर केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव, उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अर्जुन मोढवाडिया सहित उद्योग जगत के दिग्गज विशेष रूप से मौजूद रहे। प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन से प्रेरित और राज्य सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की ओर से आयोजित इस ग्लोबल कॉन्फ्रेंस की थीम 'गुजरात : भारत का सिलिकॉन गेटवे' रखी गई है, जो हाई-टेक चिप निर्माताओं और स्थानीय उद्योगों के बीच रणनीतिक सहयोग को बढ़ावा देगी।

मुख्यमंत्री ने गुजरात सेमीकनेक्ट कॉन्फ्रेंस 2026 को 'राइट जॉब एट राइट टाइम' बताते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के करकमलों साणंद में माइक्रोन प्लांट की शुरुआत से देश के लिए टेक्नोलॉजिकल युग की क्रांति का शंखनाद हुआ है।

मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि इस ऐतिहासिक घटना के तुरंत बाद शुरू हो रही यह गुजरात सेमीकनेक्ट कॉन्फ्रेंस राज्य के सेमीकंडक्टर सेक्टर इकोसिस्टम की तैयारी को मजबूत करने और वैश्विक साझेदारों को राज्य में आकर्षित करने के साथ ही रिसर्च, इनोवेशन और सप्लाई चेन के लोकलाइजेशन के जरिए आत्मनिर्भर भारत का विजन पूरा करेगी।

मुख्यमंत्री ने सेमीकंडक्टर इंडस्ट्रीज के कप्तानों और निवेशकों को धोलेरा और साणंद में चिप मैन्युफैक्चरिंग एवं गिफ्ट सिटी में डिजाइन एवं फाइनेंस के समन्वय से राज्य में मौजूद एंड-टू-एंड एक्सक्लुजिव इकोसिस्टम के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

उन्होंने कहा कि धोलेरा विशेष निवेश क्षेत्र (एसआईआर) अब एक ब्लूप्रिंट नहीं रहा, बल्कि भारत की सेमीकॉन सिटी बनने जा रहा है। धोलेरा और साणंद में सेमीकंडक्टर सेक्टर के लिए भविष्य की आवश्यकतानुसार क्वालिटी इंफ्रास्ट्रक्चर, प्लग एंड प्ले फैसिलिटी और लॉजिस्टिक्स व्यवस्थाओं को आधुनिक बनाया है।

श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में गुजरात सेक्टर स्पेसिफिक नीति निर्माण के जरिए पॉलिसी ड्रिवन स्टेट, टेक्नोलॉजी-आधारित विकास को प्राथमिकता और ईज ऑफ डूइंग बिजनेस के कारण ग्लोबल कंपनियों और निवेशकों के लिए निवेश की पहली पसंद बन गया है।

उन्होंने कहा कि दुनिया के उद्योग जब कार्बन फुटप्रिंट और कार्बन टैक्स को लेकर चिंता में है, तब गुजरात पावर सरप्लस स्टेट और रिन्यूएबल एनर्जी सेक्टर में अग्रणी रहकर ग्रीन ग्रोथ को प्राथमिकता देता है। गुजरात ऐसे सुदृढ़ इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ सेमीकॉन इंडस्ट्रीज के लिए युवा स्किल्ड वर्कफोस्र तैयार करने की दिशा में भी प्रतिबद्ध है और आईआईटी-गांधीनगर में इस उद्देश्य से 'समर्थ' प्रोजेक्ट के अंतर्गत नैनो फैब्रिकेशन लैब का निर्माण हो रहा है।

मुख्यमंत्री ने सेमीकॉन सेक्टर के निवेशकों को विश्वास दिलाया कि गुजरात सेमीकॉन सेक्टर में नए निवेश से प्रधानमंत्री के आत्मनिर्भर और विकसित भारत@2047 के संकल्प को चिप से चैम्पियन तक के सफर के जरिए चरितार्थ करने में आगे रहेगा और गुजरात में उनका निवेश सस्टेनेबल डेवलपमेंट का बेंचमार्क स्थापित करेगा।

केंद्रीय मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव

इस अवसर पर केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि कल का दिन भारत के सेमीकंडक्टर सफर में एक ऐतिहासिक दिन था। साणंद में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के करकमलों से माइक्रोन के पहले प्लांट की शुरुआत के साथ भारत ने दुनिया के सेमीकंडक्टर नक्शे पर एक विशेष स्थान प्राप्त किया है। इस सफलता के बाद सरकार अब 'सेमीकॉन 2.0' लॉन्च करने जा रही है, जिसका मुख्य उद्देश्य भारत को न केवल मैन्युफैक्चरिंग, बल्कि डिजाइन, मशीनरी और टैलेंट का वैश्विक केंद्र बनाना है। प्रधानमंत्री के विजन और क्रियान्वयन पर जोर देते हुए केंद्रीय मंत्री ने कहा कि भारत ने अतीत में सेमीकंडक्टर राष्ट्र बनने का सपना देखा था, जिस तरह से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में इस क्षेत्र में एक स्पष्ट नीति बनाकर उसका सटीकता के साथ क्रियान्वयन किया गया, उसने इस सपने को हकीकत में बदल दिया है। जब वर्ष 2021 में इस संबंध में पहला प्रेजेंटेशन दिया गया था, तब प्रधानमंत्री ने 45 मिनट के बजाय 3 घंटे तक हर मामले पर गहराई से चर्चा की थी, जो इस मिशन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दिखाता है।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि 'दौड़ने से पहले चलना सीखें' के सिद्धांत के साथ सेमीकॉन 1.0 सफल होने के बाद, अब सेमीकॉन 2.0 के अंतर्गत कुछ प्राथमिकताएं निर्धारित की गई हैं, जिसमें डिजाइन इकोसिस्टम के जरिए क्वालकॉम, ब्रॉडकॉम और एनवीडिया जैसी कंपनियां देश में ही तैयार हो, इसके लिए डीप-टेक स्टार्टअप्स को प्रोत्साहन दिया जाएगा। भारत न केवल चिप्स, बल्कि चिप बनाने वाली मशीनरी, मटेरियल और टेस्टिंग इकोसिस्टम भी विकसित करेगा। जापान के मॉडल से सीख लेकर, भारत अगले 20 वर्षों के विजन के साथ यह मजबूत नींव बना रहा है। वैश्विक टैलेंट हब के बारे में केंद्रीय मंत्री ने कहा कि सेमीकंडक्टर उद्योग में वैश्विक स्तर पर 20 लाख विशेषज्ञों की कमी होने वाली है, जिसे भारत पूरा करेगा। भारत ने 10 साल में 85 हजार इंजीनियर तैयार करने का लक्ष्य केवल चार वर्ष में ही हासिल कर लिया है। अभी देश की 315 यूनिवर्सिटियों में विद्यार्थी वास्तविक चिप्स डिजाइन कर रहे हैं। अब इस नेटवर्क को 315 से बढ़ाकर 500 यूनिवर्सिटी तक ले जाया जाएगा, ताकि हर राज्य के युवाओं को इस हाई-टेक क्षेत्र में रोजगार मिल सके।

केंद्रीय मंत्री श्री वैष्णव ने आगे कहा कि इंफ्रास्ट्रक्चर के स्तर पर 250 बिलियन डॉलर और डीप-टेक वीसी फंडिंग में 17 बिलियन डॉलर के निवेश की प्रतिबद्धता व्यक्त की गई है। वर्ष 2047 तक टैक्स इंसेंटिव्स का आश्वासन देते हुए सरकार ने नीतिगत स्थिरता दी है, जिससे भारत की आईटी इंडस्ट्री अब सॉफ्टवेयर सर्विसेज से आगे बढ़कर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई)-आधारित सर्विसेज में दुनिया का नेतृत्व करेगी।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने बजट में 2047 तक के प्रोत्साहन देकर डेटा सेंटर्स के लिए एक मजबूत नींव रखी है। चूंकि गुजरात के पास अतिरिक्त बिजली और क्लीन एनर्जी उपलब्ध है, इसलिए राज्य सरकार के पास डेटा सेंटर्स स्थापित करने का बढ़िया अवसर है। यह कदम भारत को दुनिया के डेटा हब के रूप में स्थापित करने और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के विजन को साकार करने में अहम भूमिका निभाएगा। केंद्रीय मंत्री ने आगे कहा कि इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर का अभूतपूर्व विकास हुआ है, जो पिछले 10 वर्षों में 2 लाख करोड़ रुपए से बढ़कर 12 लाख करोड़ रुपए तक पहुंच गया है। अभी इस उद्योग में 25 लाख लोगों को रोजगार प्राप्त है और यह 20 फीसदी से अधिक के कंपाउंडेड एनुअल ग्रोथ रेट (सीएजीआर) के साथ लगातार आगे बढ़ रहा है।

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी

- गुजरात देश में सर्वाधिक 'रिटर्न ऑन इन्वेस्टमेंट' की गारंटी देने वाला राज्य है
- गुजरात निवेशकों को निवेश के साथ-साथ सुरक्षित भविष्य की भी गारंटी देता है
- देश की केवल 5 फीसदी आबादी और 6 फीसदी भौगोलिक क्षेत्रफल वाले गुजरात की भारत के कुल मैन्युफैक्चरिंग आउटपुट में 18 फीसदी, जीडीपी में 8 फीसदी, निर्यात में 30 फीसदी और कुल कार्गो हैंडलिंग में 40 फीसदी से अधिक की हिस्सेदारी

केंद्रीय मंत्री इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव

- साणंद में माइक्रोन के पहले प्लांट की शुरुआत के साथ भारत ने दुनिया के सेमीकंडक्टर नक्शे पर विशेष स्थान प्राप्त किया
- भारत केवल चिप्स ही नहीं, बल्कि चिप बनाने की मशीनरी, मटेरियल और टेस्टिंग इकोसिस्टम भी विकसित करेगा
- सेमीकंडक्टर उद्योग में वैश्विक स्तर पर 20 लाख विशेषज्ञों की कमी होगी, जिसे भारत पूरा करेगा
- गुजरात के पास अतिरिक्त बिजली और क्लीन एनर्जी उपलब्ध होने के कारण राज्य में डेटा सेंटर्स स्थापित करने का बढ़िया अवसर

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

- यह कॉन्फ्रेंस देश के ग्रोथ इंजन गुजरात को टेक इंजन बनाने का संकेत है
- धोलेरा एसआईआर केवल ब्लूप्रिंट नहीं, बल्कि अब देश की सेमीकॉन सिटी बनने को तैयार है
- हम सेमीकंडक्टर सेक्टर के लिए आवश्यकतानुसार इंफ्रास्ट्रक्चर और लॉजिस्टिक्स के साथ-साथ युवा स्किल्ड वर्कफोर्स भी तैयार कर रहे हैं
- सेमीकॉन सेक्टर में नए निवेश के साथ आत्मनिर्भर और विकसित भारत@2047 के प्रधानमंत्री के संकल्प को चिप से चैम्पियन तक के सफर से चरितार्थ करने का गुजरात का लक्ष्य है।

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व और मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में गुजरात का साणंद भारत का नया सिलिकॉन वैली बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि गुजरात आज निवेशकों की पहली पसंद बन रहा है। गुजरात देश में सर्वाधिक 'रिटर्न ऑन इन्वेस्टमेंट' यानी निवेश पर प्रतिफल की गारंटी देने वाला राज्य है। गुजरात राज्य केवल निवेश के लिए नहीं है, बल्कि सुरक्षित भविष्य की गारंटी है। श्री संघवी ने निवेशकों को आश्वस्त करते हुए कहा कि गुजरात में आज किया गया निवेश आने वाली 10 पीढ़ियों तक सुरक्षित रहेगा।

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने गुजरात की आर्थिक क्षमता के आंकड़े रखते हुए कहा कि गुजरात के पास देश की केवल 5 फीसदी आबादी और 6 फीसदी भौगोलिक क्षेत्रफल है, इसके बावजूद भारत के कुल मैन्युफैक्चरिंग आउटपुट में गुजरात का योगदान 18 फीसदी से अधिक है। भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में गुजरात की हिस्सेदारी 8 फीसदी से अधिक है। देश के कुल निर्यात में 30 फीसदी से अधिक और कुल कार्गो हैंडलिंग में गुजरात का हिस्सा 40 फीसदी से अधिक है।

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्षों से बनी हुई राजनीतिक और नीतिगत स्थिरता गुजरात की सबसे बड़ी ताकत है। गुजरात सरकार हमेशा निवेशकों की छोटी से छोटी समस्याओं को सुनकर उसका समाधान करने की भावना के साथ काम करती है। सेमीकंडक्टर क्षेत्र में गुजरात के युवा वैश्विक स्तर का प्रशिक्षण प्राप्त कर तैयार हुए हैं और वे अन्य देशों के युवाओं के मुकाबले अधिक परिश्रमी सिद्ध हुए हैं।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अर्जुन मोढवाडिया

इस अवसर पर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अर्जुन मोढवाडिया ने कहा कि जब दुनिया कोविड-19 की चुनौतियों से जूझ रही थी, तब कुछ सेक्टरों की सप्लाई चेन विशेष रूप से प्रभावित हो गई थी, जिनमें सेमीकंडक्टर सेक्टर महत्वपूर्ण है। सेमीकंडक्टर का उत्पादन बंद होने से दुनिया के कई उद्योगों पर बुरा प्रभाव पड़ा। यह एक बड़ी चुनौती थी, इस चुनौती को एक अवसर मानते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश को सेमीकंडक्टर हब बनाने का निर्णय किया। इस परिकल्पना को साकार करने के लिए कल यानी शनिवार को प्रधानमंत्री के करकमलों से साणंद में देश के पहले माइक्रोन एटीएमपी प्लांट का उद्घाटन हुआ। हमें इस क्षेत्र में अभी बहुत कुछ करना बाकी है । मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात नॉलेज हब बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। इस अवसर पर मुख्य सचिव श्री एम.के. दास ने कहा कि शनिवार को हम सभी एक ऐतिहासिक पल के गवाह बने, जब प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सेमीकंडक्टर के निवेश का उद्घाटन किया। इस प्रोजेक्ट के साथ गुजरात अब सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम का एक मजबूत केंद्र बन गया है। उन्होंने कहा कि धोलेरा एसआईआर दुनिया के सबसे बड़े और अत्याधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर वाले क्षेत्रों में से एक है, जो हाई-टेक मैन्युफैक्चरिंग के लिए तैयार है। इसके अलावा, गिफ्ट सिटी निवेशकों के लिए अभूतपूर्व वित्तीय ढांचा प्रदान करता है, जो गुजरात को वैश्विक स्तर पर टेक्नोलॉजी और उद्योग के लिए एक आदर्श राज्य बनाता है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की सचिव श्रीमती पी. भारती ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'आत्मनिर्भर भारत' के स्वप्न को साकार करने के लिए भारत अब केवल टेक्नोलॉजी का बाजार ही नहीं, बल्कि एक महत्वपूर्ण निर्माता बनने की ओर आगे बढ़ रहा है। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात भविष्य का इंतजार नहीं करता, बल्कि उसका निर्माण कर रहा है। उन्होंने कहा कि यह कॉन्फ्रेंस केवल एक समारोह नहीं, अपितु सेमीकंडक्टर क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर अग्रणी बनने की गुजरात की मजबूत प्रतिबद्धता को दर्शाती है। इस कॉन्फ्रेंस में राज्य में सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम को और मजबूत करने के लिए वैश्विक स्तर के दिग्गजों ने हिस्सा लिया। कॉन्फ्रेंस के तहत आयोजित थीमैटिक पैनल्स में मैन्युफैक्चरिंग, इंफ्रास्ट्रक्चर, फाइनेंस, रिसर्च एंड डेवलपमेंट और फ्यूचर स्किल्स पर विशेष चर्चा की गई। इसके अलावा, जापान और ताइवान जैसे देशों के साथ अंतरराष्ट्रीय सहयोग बढ़ाने के लिए 'कंट्री राउंडटेबल' का आयोजन भी किया गया। समारोह में उद्योग एवं खान विभाग की अपर मुख्य सचिव सुश्री ममता वर्मा, उद्योग आयुक्त श्री पी. स्वरूप, धोलेरा एसआईआर के सीईओ श्री कुलदीप आर्य, गुजरात स्टेट इलेक्ट्रॉनिक्स मिशन की मिशन डायरेक्टर सुश्री नेहा कुमारी सहित आईटी और इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योगों से जुड़े कई मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ), प्रबंध निदेशक (एमडी), शोधकर्ता, नवोन्मेषक, प्रतिनिधिगण और विद्यार्थी मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की गुजरात सेमीकनेक्ट कॉन्फ्रेंस 2026 में हिस्सा लेने आए विभिन्न उद्योगकारों एवं निवेशकों के साथ वन-टू-वन बैठक

राज्य में मेमोरी मॉड्यूल फैसिलिटी, पावरचिप विनिर्माण, सेमीकंडक्टर के लिए आरएंडडी सेंटर और स्पेशलिटी केमिकल फैसिलिटी शुरू करने सहित कई मुद्दों पर हुआ विचार-विमर्श

जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने रविवार को गांधीनगर स्थित महात्मा मंदिर में 'गुजरात सेमीकनेक्ट कॉन्फ्रेंस 2026' का शानदार प्रारंभ किया। हाई-टेक चिप निर्माताओं और स्थानीय उद्योगों के बीच रणनीतिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए 'गुजरात – इंडियाज गेटवे टू सिलिकॉन' विषय के साथ राज्य सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के तत्वावधान में इस दो दिवसीय कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया है।

इस कॉन्फ्रेंस में हिस्सा लेने के लिए आए विभिन्न उद्योग लीडरों की मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के साथ हुई वन-टू-वन बैठक के दौरान उन्होंने सेमीकॉन सेक्टर में अनुसंधान एवं विकास (आरएंडडी), मेमोरी मॉड्यूल फैसिलिटी, पावरचिप विनिर्माण और स्पेशलिटी केमिकल फैसिलिटीज शुरू करने के लिए फलदायी विचार-विमर्श किया।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गुजरात में धोलेरा और साणंद सहित सेमीकंडक्टर इंडस्ट्रीज के सुदृढ़ इकोसिस्टम और राज्य सरकार के प्रोएक्टिव दृष्टिकोण के बारे में विस्तार से बताया। मुख्यमंत्री ने इस वन-टू-वन बैठक के अंतर्गत दीपक नाइट्रेट के प्रबंध निदेशक (एमडी) श्री मेघव मेहता, मलेशिया स्थित होतायी इलेक्ट्रॉनिक्स के चेयरमैन श्री दातो शेरी ली हंग लूंग, सूचि-आरओएचएम सेमीकॉन के एमडी श्री मोकोटो तेराडा और संस्थापक श्री अशोक मेहता, होरिबा इंडिया के श्री राजीव गौतम और एप्लाइड मटेरियल्स की मुख्य परिचालन अधिकारी (सीओओ) सुश्री राधिका विश्वनाथन से मुलाकात की।

मुख्य सचिव श्री एम.के. दास, उद्योग विभाग की अपर मुख्य सचिव सुश्री ममता वर्मा, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव श्री संजीव कुमार, उद्योग आयुक्त श्री पी. स्वरूप, मुख्यमंत्री के अपर प्रधान सचिव डॉ. विक्रांत पांडे और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की सचिव श्रीमती पी. भारती भी वन-टू-वन बैठक में उपस्थित रहे।

माननीय रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने अहमदाबाद -धोलेरा सेमी हाई स्पीड रेल कनेक्टिविटी प्रोजेक्ट की समीक्षा

जीएनएस)। माननीय रेल, सूचना एवं प्रसारण तथा इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने आज (01.03.2026) पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद -धोलेरा सेमी हाई स्पीड रेल कनेक्टिविटी प्रोजेक्ट के अंतर्गत सरखेज-धोलेरा डबलिंग के साथ नेशनल मरीटाइम हेरिटेज काम्प्लेक्स (NMHC) व धोलेरा एयरपोर्ट के बीच SPUR लाइन (134 किमी) के कार्यों की प्रगति की समीक्षा की। इस दौरान पश्चिम रेलवे के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण) श्री प्रदीप गुप्ता ने इस परियोजना की प्रगति के बारे माननीय रेल मंत्री को बताया। इस दौरान श्री वेद प्रकाश, मंडल रेल प्रबंधक अहमदाबाद ,निर्माण विभाग एवं मंडल के अधिकारी मौजद थे।

यह परियोजना पूरे देश में सेमी हाई स्पीड रेल के एक प्रोटोटाइप के रूप में विकसित की जा रही है इसके अलावा यह अहमदाबाद और धोलेरा स्पेशल इन्वेस्टमेंट रीजन के बीच बेहतर और तेज़ कनेक्टिविटी प्रदान करने का कार्य भी करेगी।

सरखेज–धोलेरा सेमी हाई स्पीड रेल परियोजना सरखेज–धोलेरा ब्रॉड गेज सेक्शन पर 1676 मिमी ब्रॉड गेज पर विकसित की जाने वाली विश्व की पहली सेमी हाई स्पीड रेल परियोजना प्रणाली होगी, जिसकी अधिकतम संभावित गति 220 किमी/घंटा होगी।

मिश्रित यातायात (Mixed Traffic) प्रणाली – यह पहली SHSR प्रणाली होगी जिसमें मालगाड़ी 100 किमी/घंटा तथा यात्री ट्रेन 220 किमी/घंटा स्पीड से एक ही ट्रैक पर संचालित होंगी।

परियोजना का उपयोगिता

धोलेरा को सेमीकंडक्टर उद्योग और सोलर एनर्जी कंपोनेंट मैन्युफैक्चरिंग का प्रमुख हब बनाने में यह परियोजना महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

गुजरात देश में सौर ऊर्जा की स्थापित क्षमता वाले अग्रणी राज्यों में से एक है। सौर ऊर्जा क्षमता बढ़ाने की महत्वाकांक्षी योजनाओं के कारण सोलर कंपोनेंट्स की मांग लगातार बढ़ रही है। इस परियोजना के माध्यम से उद्योगों को घरेलू बाजार तक तेज और सुगम कनेक्टिविटी मिलेगी।

अहमदाबाद जैसे बड़े शहर से धोलेरा जैसे उभरते सैटेलाइट शहर तक कुशल मानव संसाधन का आवागमन आसान होगा। इससे उद्योगों को प्रशिक्षित और योग्य कार्यबल शीघ्र उपलब्ध होगा।

यह परियोजना प्रस्तावित लॉजिस्टिक्स ज़ोन और मल्टी-मोडल कनेक्टिविटी उद्योगों को सप्लायर्स और बाजारों से निर्बाध रूप से जोड़ेगी।

फॉर-लेन एक्सेस कंट्रोल्ड एक्सप्रेसवे, सेमी हाई स्पीड रेल और वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर जुड़ाव से घरेलू बाजार और निर्यात द्वार जैसे जवाहरलाल नेहरू पोर्ट तक त्वरित पहुंच सुनिश्चित होगी।

सरखेज–धोलेरा सेमी हाई स्पीड रेल परियोजना, उत्कृष्ट कनेक्टिविटी, कुशल मानव संसाधन और उन्नत लॉजिस्टिक्स के माध्यम से धोलेरा स्पेशल इन्वेस्टमेंट रीजन को सेमीकंडक्टर और सोलर मैन्युफैक्चरिंग का सशक्त औद्योगिक केंद्र बनाने में सहायक सिद्ध होगी।

भारत के औद्योगिक इतिहास में ऐतिहासिक दिन: पहला सेमीकंडक्टर प्लांट राष्ट्र को समर्पित

जीएनएस)। गुजरात को रेलवे क्षेत्र में रिकॉर्ड 17,366 करोड़ का बजट का आवंटन

माननीय रेल, सूचना एवं प्रसारण तथा इलेक्ट्रॉनिकी एवं

सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव माननीय रेल, सूचना एवं प्रसारण तथा इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने 28 फरवरी और 01 मार्च 2026 को गुजरात का दौरा किया।

गांधीनगर कैपिटल में आयोजित गुजरात सेमीकनेक्ट कॉन्फ्रेंस 2026 में मीडिया को संबोधित किया। इस दौरान माननीय मंत्रीजी ने अपने संबोधन में कहा कि माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कल भारत के औद्योगिक इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ते हुए देश के पहले सेमीकंडक्टर प्लांट का उद्घाटन किया। देश के समक्ष भारत में सेमीकंडक्टर उद्योग स्थापित करने का जो संकल्प रखा गया था, वह आज साकार हुआ है।

यह केवल शुरुआत है। स्वीकृत 10 सेमीकंडक्टर प्लांट्स में से चार का उद्घाटन एवं उत्पादन वर्ष 2026 में प्रस्तावित है, जिनमें से एक का शुभारंभ हो चुका है और तीन अन्य इस वर्ष प्रारंभ होंगे। अन्य परियोजनाओं पर भी तीव्र गति से कार्य प्रगति पर है।

धोलेरा में टाटा फैब सहित गुजरात

में विकसित हो रहा सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम देश के लिए मील का पत्थर सिद्ध होगा। इस दिशा में गुजरात सरकार के नेतृत्व में किए जा रहे प्रयासों के लिए माननीय मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल का विशेष आभार व्यक्त किया गया।

गुजरात में रेलवे विकास को रिकॉर्ड बजट, अभूतपूर्व निवेश

रेलवे क्षेत्र में भी गुजरात को इस वर्ष रिकॉर्ड 17,366 करोड़ रुपये का बजट प्रदान किया गया है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2009–14 के दौरान राज्य को मात्र 589 करोड़ रुपये का वार्षिक बजट मिलता था।

वर्तमान में गुजरात में कुल 1,28,748 करोड़ रुपये के रेलवे निवेश पर कार्य जारी है। राज्य के 87 रेलवे स्टेशनों का व्यापक पुनर्विकास किया जा रहा है, जिनमें से 21 स्टेशन पूर्ण हो चुके हैं। अहमदाबाद, साबरमती, सूरत, उधना और सोमनाथ सहित अनेक स्टेशनों पर तीव्र गति से कार्य प्रगति पर है।

बुलेट ट्रेन परियोजना में तीव्र प्रगति, 2027 में संचालन लक्ष्य

मुंबई-अहमदाबाद हाई स्पीड रेल परियोजना में भी उल्लेखनीय प्रगति हो रही है। परियोजना पूर्ण होने पर मुंबई से अहमदाबाद के बीच यात्रा मात्र 1 घंटा 57 मिनट में संभव होगी तथा ट्रेन की अधिकतम गति 350 किमी प्रति घंटा होगी।

हाल ही में जापान के प्रधानमंत्री कार्यालय के प्रतिनिधियों ने परियोजना का निरीक्षण कर कार्य की गुणवत्ता एवं प्रगति पर संतोष व्यक्त किया। इसके अतिरिक्त, माननीय प्रधानमंत्री द्वारा सात नई बुलेट ट्रेन परियोजनाओं को भी स्वीकृति प्रदान की गई है। समग्र रूप से, सेमीकंडक्टर, रेलवे, इलेक्ट्रॉनिक्स सहित विभिन्न क्षेत्रों में देश तीव्र गति से प्रगति कर रहा है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के मार्गदर्शन में भारत विकास के नए आयाम स्थापित कर रहा है।